शोध सरोवर पत्रिका

आरती, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य।

RNI No. KERHIN/2017/70008 ISSN No. 2456-625 X

वर्ष 5 अंक 18 त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका 10 अप्रैल 2021

मुख्य संपादक
डॉ.पी.लता

प्रबंध संपादक
डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

सह संपादक
प्रो.सती.के
डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा
श्रीमती वनजा.पी

संपादक मंडल
प्रो.एस.कमलम्मा
डॉ.जी.गीताकुमारी
डॉ.गिरिजा.डी
डॉ.बिन्दु.सी.आर
डॉ.षीना.यू.एस
डॉ.सुमा.आई
डॉ.एलिसबत्त जोर्ज
डॉ.लक्ष्मी.एस.एस
डॉ.धन्या.एल
डॉ.कमलानाथ.एन.एम
डॉ.अश्वती.जी.आर

सूचना : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। उनसे संपादक तथा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संपादकीय	:	3
दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार-प्रसार, दशा, दिशा एवं संभावनाएँ	: डॉ.एस.तंकमणि अम्मा	6
भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन एवं अनुवाद	: डॉ.बाबू.के.विश्वनाथन	15
वैश्विक स्तर पर हिन्दी की स्वीकृति	: डॉ.आशा एस नायर	19
व्यतिरेकी भाषा विज्ञान : मलयालम और हिन्दी के अनुवाद के संदर्भ में	: डॉ.षीबा शरत एस	20
सही उत्तर चुनें	: डॉ.पी.लता	22
हिन्दी का वैश्विक संदर्भ	: डॉ.एलिसबत जॉर्ज	23
विदेशों में हिंदी अध्ययन	: डॉ.सौम्या वी.एम	25
वैश्विक सन्दर्भ में हिंदी प्रचार में जुड़े प्रवासी साहित्यकारों की देन	: डॉ.लक्ष्मी.एस.एस	26
हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य	: डॉ.प्रिया.ए	30
श्रद्धांजलि विष्णु नारायणन नंपूतिरि	: डॉ.पी.लता	31
वैश्विक हिन्दी लेखक 'अज्ञेय': 'नदी के द्वीप' के विशेष संदर्भ में	: डॉ.धन्या.एल	33
कनाडा में हिन्दी की दशा और दिशा	: डॉ.रंजीत रविशैलम	37
अमेरिका में हिन्दी शिक्षण	: अजित्रा.आर.एस	40
श्रद्धांजलियाँ : पद्मश्री गुरु चेमञ्चेरी कुञ्जिरामन नायर, पी.बालचन्द्रन	: डॉ.पी.लता	42
विश्वभाषा और राज भाषा	: डॉ.पी.लता	43

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मैलिक तथा अप्रकाशित रचनाएँ भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ डी.वी.सुरेख ई.एन फोण्ट में वर्ड या पेजमेकर फाइल में भेजें। रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता भी अंकित करें। संक्षिप्त जीवन-परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक

डॉ.पी.लता

शोध सरोवर पत्रिका

मूल्य : एक प्रति रु. 100/-

वार्षिक शुल्क रु.400/-

पियर रिव्यू समिति :

डॉ.टी.के.नारायण पिल्लै

डॉ.शांति नायर

डॉ.के.श्रीलता

पत्रिका के संबंध में अधिक जानकारी केलिए संपर्क करें - डॉ.पी.लता (संपादक, शोध सरोवर पत्रिका; मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी), आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफीस लेन, ई-28, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य। फोन : 0471 - 2332468, 9946253648

ई-मेल : akhilbharatheeyhindiacademy@gmail.com

वेबसाइट : www.shodhsarovarpatrika.co.in

संपादकीय हिन्दी - भारतीय संस्कृति की संवाहिका

संस्कृति' एक देश की जनता की परंपरागत संपत्ति है। किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की वे सब बातें 'संस्कृति' हैं, जो उसकी रुचि, आचार - विचार, रहन - सहन, खान - पान, कला कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं। संस्कृति की नींव पर ही समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। 'संस्कृति' का समानांतर अंग्रेज़ी शब्द है 'कल्चर'। किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की वे सब बातें 'सभ्यता' है जो उसके सौजन्य, शिक्षित और उन्नत होने की सूचक होती है। 'सभ्यता' का समानांतर अंग्रेज़ी शब्द है 'सिविलिज़ेशन'।

हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति की संवाहिका है, क्योंकि मूल भारतीय संस्कृति 'वैदिक संस्कृति' है, जिसमें कालांतर में अन्य कुछ संस्कृतियाँ मिल गयीं, विशेषकर इस्लाम संस्कृति और ईसाई संस्कृति। वेदों की भाषा संस्कृत है और संस्कृत की बेटी है हिन्दी। सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी, वैदिक युग में विकसित हुई और बाद में फूली - फली भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ हैं - विविधता में एकता, सामासिक संस्कृति, धर्म पालन को सबसे बड़ा आदर्श मानना, 'वसुधैव कुटुंबकम्' की कल्पना को सार्थक करना, नारी की दैविक स्थिति, मानवतावाद, अतिथि सत्कार, अपरिग्रह (ज़रूरत्त से अधिक चीज़ें इकट्ठा न करना), सदाचार, ज्ञान को महत्व देना, विचार, स्वालंब आदि।

भारत में एक सीमित प्रदेश की बोली मात्र रही खड़ीबोली कुछ ऐतिहासिक कारणों से विकसित होकर भारत की संपर्क भाषा, साहित्य भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा और विश्वभाषा बन गयी। हिन्दी आज विविध कार्यक्षेत्रों में 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' के रूप में काम आती है। जनसंचार के क्षेत्र में, यानी दूरदर्शन, सिनेमा, पत्रकारिता, कंप्यूटर जैसे क्षेत्रों में अब हिन्दी बहुत आगे बढ़ चुकी है। हिन्दी फिल्मों ने बोलीवुड़ के कारण अपना वर्चस्व स्थापित किया है। कंप्यूटर, फेसबुक तथा ई - मेल के इस युग में संप्रेषण को स्थानों की दूरी एक समस्या नहीं बनती और समय की बचत भी होती है। सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा के रूप में हिन्दी का विकास हो रहा है। कहने का मतलब यह है कि हिन्दी आज हिन्दी क्षेत्र की मातृभाषा मात्र नहीं, वह संपूर्ण भारत की भाषा है और विश्व भाषा भी है। भारत से विदेशों में नौकरी, व्यापार या उच्च शिक्षा केलिए जानेवाले व्यक्ति वहाँ परस्पर हिन्दी में बोलते हैं। विदेश में अधिकांश व्यक्ति यहाँ से पहले अकेला जाता है, बाद में अपने परिवार को भी साथ ले जाता है। इनमें अधिकांश सपरिवार वहाँ की नागरिकता भी अपनाते हैं। यों हिन्दी बोलनेवालों की संख्या बढ़ने पर विदेशों में स्कूलों - विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ायी जाती है, हिन्दी पत्रिकाएँ निकाली जाती हैं तथा विविध साहित्य विधाओं में हिन्दी में लेखन-कार्य भी होता है। प्रवासी भारतीयों के व्यवहार में तथा उनके सृजनात्मक साहित्य में भारतीय संस्कृति अंतर्भूत होना

सहज ही है। हिन्दी भारतीयों की राष्ट्रीय अस्मिता तथा स्वदेशी भावना की प्रतीक है। प्रवासी भारतीयों को भी हिन्दी अपनी सांस्कृतिक आस्मिता की प्रतीक रही है। पौराणिक ग्रंथों में मर्यादा पुरुषोत्तम और लोकरक्षक श्रीराम, पतिव्रता नारी सीता तथा लोकरंजक श्रीकृष्ण से परिचित भारतीय जितने ही आधुनिक बनें या अन्य संस्कृतियों का अनुकरण करें, वे कभी भी मूल भारतीय संस्कृति विस्मृत नहीं कर सकते।

भारत में स्वतंत्रता - संग्राम के समय उसमें समर्पित भाव से जुड़े व्यक्तियों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने तथा स्वदेशी को स्वीकार करने का निर्णय मनसा स्वीकार किया। पूरे भारत में एक भाषा की आवश्यकता महसूस हुई तो महात्मा गाँधी ने दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का श्रीगणेश किया तो कई राष्ट्रप्रेमी हिन्दी प्रचारकों ने खद्दर वस्त्र पहनकर एक मिशन के रूप में हिन्दी भाषा का प्रचार किया। इन सबके पीछे उनकी स्वदेशी भावना है। युनेस्को के एक सर्वेक्षण के अनुसार सबसे बड़ी विश्व भाषाएँ तीन हैं- मंडारिन, हिन्दी और अंग्रेज़ी। विश्वभाषा तथा भारतीय संस्कृति की संवाहिका भाषा के रूप में 'हिन्दी' पर विचार करते वक्त यह भी ध्यान रखना है कि साहित्य, समाज और संस्कृति में अटूट संबन्ध है तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का आरंभ फ्रेंच विद्वान गार्सा द तासी ने सर्वप्रथम किया था, जो पैरिस यूनिवर्सिटी में अरबी तथा भारतीय भाषाओं के प्रोफेसर थे। उनका फ्रेंच भाषा में लिखित तथा सन् 1939 में प्रकाशित हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम इतिहास ग्रंथ 'इस्तवार द ला लितरेत्वर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी' में हिन्दी काव्य साहित्य का इतिहास प्रस्तुत है। यह ग्रंथ अब 'हिन्दुई साहित्य का इतिहास' नाम से हिन्दी में उपलब्ध है। डॉ. जोर्ज ग्रियेर्सन का 'द मोडेर्न वर्नेकुलार लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' भी यहाँ स्मरणीय है, जो परवर्ती इतिहास ग्रंथकारों को आदर्श बना।

10-14 जनवरी 1975 को नागपुर (भारत) में संपन्न प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन से लेकर 18-20 अगस्त 2018 को मोरीशस में संपन्न 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन तक ने 'विश्व हिन्दी' की संकल्पना की व्यावहारिक आधारभूमि सज्जित की। अब तक संपन्न हुए 11 विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने 'ग्लोबल विल्लेज' (भौम ग्राम) की हमारी संकल्पना को मूर्त्त रूप प्रदान किया है। ग्यारहवें सम्मेलन का विषय रहा 'हिन्दी विश्वः भारतीय संस्कृति' प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था 'वसुधैव कुटुम्बकम्'। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। मूल भारतीय संस्कृति को समझने केलिए तुलसीदास की रचना 'रामचरितमानस' उत्तम है, जिसका देशी - विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

मॉरीशस में तीन वीश्व हिन्दी सम्मेलन (1976, 1993 और 2018 को- मॉरीशस, फिजी, यूरीनाम, गुयाना, ट्रिनिडाड - टुबैगो आदि)संपन्न हो चुके हैं। हमें विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति पर विचार करते वक्त गिरमिटिया देशों को, खासकर मॉरीशस द्वीप को नहीं छोड़ना चाहिए। वर्तमान में इन द्वीपों में जो जन निवास करते हैं उनके पूर्वजों को फ्रांसीसी और अंग्रेज़ी उपनिवेशवादी मालिकों द्वारा भारत से धोखे से शर्तबद्ध मज़दूरों के रूप में यहाँ लाये गये थे। झाड़ियों, चट्टानों, मच्छरों से भरे हुए द्वीपों को इन मज़दूरों ने खून पसीना

करके तथा मालिकों के कई प्रकार के भयानक पीड़नों को सहके उपजाऊ बना दिया। मॉरीशस में अब 'हिन्दी भवन' की जो इमारत विद्यमान है वहाँ की धरती पहले इन पूर्वजों द्वारा उपजाये गन्ने के खेत थे। उन खेतों के बीच पत्थरों की ढ़ेरी थी, जो खेती केलिए धरती जोतते समय निकली थी। दिन भर तन तोड़ काम करने के बाद ये मज़दूर रात के अंधेरे में मालिकों की नज़रों में पड़े बिना लालटेन की रोशनी में इन चट्टानों में बैठकर स्लेट पर हिन्दी वर्ण लिखना सीखते थे। जिन्हें रामायण, महाभारत तथा गीता की कथाएँ याद आती थीं, वे दूसरों को सुनाते भी थे। जब ये मज़दूर भारत से गये थे तब उन्होंने अपने हाथ में और कुछ लिये बिना मात्र 'रामचरितमानस' और 'हनुमान चालीसा' लिये थे। गुलामी की भयानक स्थिति में भी अपनी सांस्कृतिक सत्ता जीवित रहे, इस पर उन्होंने ध्यान दिया था। मॉरीशस के कथाकार अभिमन्यु अनत ने 'लाल पसीना' उपन्यास में भारतवंशियों के जीवन-संघर्षों की गाथा उकेरी है। मूल भारतीय संस्कृति मिथकों के सहारे जीवित रहती है। भारत की पुण्य नदी गंगा के स्मरणार्थ भारतवंशी मज़दूरों ने मॉरिशस में एक 'गंगा तालाब' का भी निर्माण किया। मैं ने मॉरीशस की संस्कृति पर यह स्पष्ट करने केलिए प्रकाश डाला कि गिरमिटिया देशों के भारतवंशी लोग मूल भारतीय संस्कृति को छोड़े बिना रहते हैं।

♦ संपादक (डॉ.पी.लता)

मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी

(पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,

सरकारी महिला महाविद्यालय)

तिरुवन्तपुरम, केरल राज्य।

फोन : 9946253648

Form IV

Statement about ownership and other particulars about the newspaper 'Shodh Sarovar Patrika' to be published in the first issue every year after the last day of February.

1. Place of publication - Thiruvananthapuram, Kerala.
2. Periodicity of publication - quarterly.
3. Printer's name - Dr.P.Letha
   Nationality - Indian
   Address- 'Arathi', TC14/1592, Forest Office Lane, E-28, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram, Kerala. PIN-695014.
4. Publisher's name- Dr.P.Letha
   Nationality - Indian
   Address- 'Arathi', TC14/1592, Forest Office Lane, E-28, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram, Kerala. PIN-695014.
5. Editor's name- Dr.P.Letha
   Nationality - Indian
   Address- 'Arathi', TC14/1592, Forest Office Lane, E-28, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram, Kerala. PIN-695014.
6. Name and addresses of individuals who own the newspsper and partner's or shareholders holding more than one percent of the total capital-
   Name- Dr.P.Letha
   Address- 'Arathi', TC14/1592, Forest Office Lane, E-28, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram, Kerala. PIN-695014.

I, Dr.P.Letha, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date : 26/03/2021 sd/-
Dr.P.Letha

दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार-प्रसार, दशा, दिशा एवं संभावनाएँ

♦ डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

आज के दौर में हिन्दी अखिल भारतीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर गयी है तो इस दिशा में भारत के दक्षिणी प्रांतों का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। दक्षिणी प्रांतों के अंतर्गत केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु आँध्रप्रदेश तथा तेलंगाना- ये पाँच प्रांत आते हैं। विविधता में एकता की सुंदर संकल्पना को संजोनेवाली भारतीय संस्कृति की विलक्षणता के ही कारण शायद होगा, 'आसेतुहिमाचल एक देश एक जनता' की परिकल्पना अतिप्राचीन काल से ही भारत में विद्यमान थी। विष्णुपुराण में कहा गया है-

"उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं
वर्षा तत् भारतं नाम भारती यत्र संततिः।।"

अर्थात् समुद्र के उत्तर तथा हिमाद्री के दक्षिण का जो देश है वह भारत है तथा भारतीय उसकी संतति है। सुदूर दक्षिणी छोर में स्थित कन्याकुमारी की चिर कुमारी उस महादेव को पाने के लिए तपस्या कर रही है जो उत्तरी छोर में स्थित हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर समाधिस्थ है। गंगोत्री का जल रामेश्वरम् के शिवलिंग पर चढ़ाए जाने की प्रथा है। उत्तर और दक्षिण को आपस में जोड़नेवाली न जाने कितनी परिकल्पनाएं विद्यमान हैं। केरल के दिग्विजयी आचार्य शंकर ने भारत के चारों कोनों (बदरी, द्वारका, पुरी और श्रृंगेरी) में चार मठों की स्थापना करके भारत की एकता को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रंथों ने भी भारतीय एकता को परिपुष्ट करने का उल्लेखनीय कार्य किया था। पहले समस्त भारतवर्ष को एक सूत्र में पिरोने में संस्कृत भाषा जो भूमिका निभा रही थी, यही भूमिका आज के संदर्भ में हिंदी को निभानी है।

दक्षिण भारत में हिंदी का प्रवेश

दक्षिणी प्रांतों का इतिहास साक्षी है कि यहाँ के प्रमुख तीर्थ स्थानों यथा, रामेश्वरम्, मदुरै, कन्याकुमारी, गुरुवायूर, गोकर्ण, तिरुपति, में सदियों पहले ही उत्तर भारत के तीर्थ यात्री और संत आते थे, तीर्थों के पास उनके आवास के लिए 'गोसाई-मठ' बने हुए थे, तथा वहाँ उनकी संपर्क भाषा हिंदी ही थी। उसी प्रकार दक्षिण के जो तीर्थयात्री काशी, गया, ऋषिकेश, हरिद्वार, बदरीनाथ जैसे तीर्थों में जाते थे, उनका संपर्क अधिकतया वहाँ के पंड़ों और गोसाइयों से होता था और वहाँ भी हिंदी उनकी संपर्क भाषा रहती थी। उस दौरान दक्षिण के लोग उत्तरवालों की दृष्टि में मद्रासी थे तथा मद्रासी लोग उत्तरवालों को 'गोसाई' पुकारते थे और उनकी भाषा को 'गोसाई' भाषा। यही गोसाई भाषा दक्षिण में प्रविष्ट हुई हिंदी का पूर्व रूप है।

दक्षिणी प्रांतों में हिंदी के प्रचार में व्यापारियों का भी बड़ा हाथ रहा है। आंध्र, तमिलनाडु तथा केरल के

बंदरगाहों और व्यापार केंद्रों में मुंबई, गोवा, कोलकत्ता, दिल्ली, अहमदाबाद, सूरत आदि नगरों के व्यापारी आते थे और इनके आदान-प्रदान की भाषा हिंदी थी।

मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में राजधानी का परिवर्तन हुआ तो सैकड़ों लोग दक्खिन में आकर बस गए थे। दक्खिन या हैदराबाद से कई परीवार तमिलनाडु और केरल में भी आकर बस गए थे जो दक्खिनी हिंदी का प्रयोग करते थे। स्पष्ट है, इस प्रकार विविध रूपों में हिंदी सदियों पहले से ही दक्षिणी प्रांतों में यत्किंचित् मात्रा में ही सही व्यवहृत थी।

राष्ट्रभाषा प्रचार आंदोलन- दक्षिण में

दक्षिणी प्रांतों में हिंदी भाषा का व्यापक प्रचार-प्रसार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही शुरू हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, राष्ट्रीयता की लहरों के साथसाथ राष्ट्रभाषा हिंदी की जो लहरें उत्तर से दक्षिण आईं दक्षिणी प्रांतों की जनता ने उनका मुक्त मन से स्वागत किया। राष्ट्रव्यापी नवजागरणआंदोलन ने भारतीय जन मानस में एक राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रभाषा की अनिवार्यता की चेतना जगाई। भारतवर्ष की समूची जनता को परस्पर जोड़नेवाली एक भाषा के अभाव में ही भारत का प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम पराजय को प्राप्त कर गया था बड़े-बड़े इतिहासकारों ने भी इस तथ्य से अपनी सहमति प्रकट की है। भारत के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जानेवाली भाषा हिंदी को स्वतंत्रता-प्राप्ति का अमोघ शस्त्र पहचानकर, महात्मा गाँधी ने अपने रचनात्मक कार्यों में हिंदी प्रचार को प्रमुख स्थान दिया। कथनी को करनी में ढालने के लिए उन्होंने दक्षिण में हिंदी का प्रचार शुरू करने के लिए अपने अठारह वर्षीय पुत्र देवदास गाँधी को सन् 1918 में मद्रास भेजा। यह गाँधी जी की दीर्घदर्शिता का परिचायक ही है कि दक्षिण के चारों प्रांतों में हिंदी प्रचार का मुख्य केंद्र स्थापित करने के लिए उन्होंने मद्रास को ही चुना। गाँधीजी के हाथों दक्षिण में वस्तुतः एक वटवृक्ष का ही बीजवपन हुआ था, जो आगे चलकर अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित होकर पूरे दक्षिण में हिंदी भाषा और साहित्य के सुफल देने लगा। देवदास गाँधी ने दक्षिण के कई राष्ट्रभाषा प्रेमियों को हिंदी सीखने के लिए साहित्य सम्मेलन, प्रयाग भेजा । ये लोग हिंदी सीखकर आए और दक्षिण में हिंदी प्रचार का कार्य आगे बढ़ने लगा। सन् 1922 तक मद्रास के मुख्य केन्द्र के अलावा अन्य प्रांतों में भी केंद्र खोलने की ज़रूरत महसूस हुई और सन् 1922 में आंध्र के नेल्लूर में मोटूरि सत्यनारायण की सहायता से एक शाखा खुली जिसके संचालक थे श्रीराम भरोसे श्रीवास्तव। श्री अवधनंदन के संचालन में तमिलनाडु की एक शाखा तिरुच्चिरप्पल्लि में खुली। सन् 1935 में बैंगलूर में कर्नाटक शाखा का कार्यालय खुला। सन् 1932 में केरल की शाखा खुली जिसके संचालक पं.देवदूत विद्यार्थी थे।

सन् 1918 से 1927 तक 'हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' की देखरेख में मद्रास की सभा का सारा कार्यभार चलता था। सन् 1927 में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' के नाम से यह एक स्वतंत्र संस्था बनी तथा गाँधीजी इसके आजीवन अध्यक्ष चुने गए। दक्षिण के चारों प्रांतों की सभाओं की तपोनिष्ठ एवं सेवानिष्ठ हिंदी प्रचारकों के अथक परिश्रम के परिणामस्वरूप दक्षिण के शहरों और गाँवों में हिंदी का प्रचार तीव्र गति से होने लगा। हिंदी सीखन-सिखाने में महिलाओं ने भी उत्सुकता दिखाई तो हिन्दी की लोकप्रियता दक्षिण के चारों प्रांतों में बढ़ती गयी। राजगोपालाचारी जी ने सन् 1928 में तमिल जनता से यह अपील की कि यदि दक्षिण

भारतीय क्रियात्मक रूप से पूरे देश के साथ एक सूत्र में बंधकर रहना चाहते हैं और अखिल भारतीय मामलों से तथा तत्संबधी निर्णयों के प्रभाव से अपने को दूर नहीं रखना चाहते हैं तो उन्हें हिंदी पढ़ना ज़रूरी है। ..... भारत की सांस्कृतिक एकता के लिए भी एक सर्वसामान्य भारतीय भाषा को ग्रहण करना पड़ेगा। दक्षिण भारतीयों को पूरे भारत में सरकारी तथा व्यावसायिक नौकरियाँ पाने के लिए भी हिंदी बोलने, समझने और लिखने का ज्ञान प्राप्त करना ज़रूरी होगा। समूचे दक्षिण भारत पर राजाजी के कथन का असर पड़ा।

दक्षिण भारत की प्रमुख हिंदी प्रचार संस्थाएँ

दक्षिण में हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने में हिंदी प्रचार संस्थाओं का बड़ा योगदान रहा है। तन-मन -धन को राष्ट्र सेवा और हिंदी सेवा के लिए समर्पित हिंदी प्रचारकों के कारण दक्षिण के चारों प्रांतों में हिंदी प्रचार का विस्तार हुआ। सन् 1935 में हैदराबाद राज्य में हिंदी प्रचार सभा की स्थापना हुई। कर्नाटक में कार्यरत हिंदी प्रचार संस्थाओं में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (धारवाड), कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति (बेंगलूरू), कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति (चामराजपेट, बेगलूरु), मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, (राजाजी नगर) आदि प्रमुख हैं। केरल में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' की दो शाखाएँ कार्यरत हैं। एक शाखा एरणाकुलम में तथा दूसरी तिरुवनन्तपुरम में। सन् 1934 में श्री.के.वासुदेवन पिल्लै ने तिरुवनंतपुरम में तिरुवितांकूर हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की। 1961 में इसका नाम 'केरल हिंदी प्रचार सभा' कर दिया गया। इनके अलावा 'हिंदी विद्यापीठ', 'अखिल भारतीय हिंदी अकादमी' जैसी अन्य दर्जनों हिंदी प्रचार संस्थाएँ केरल में कार्यरत हैं।

दक्षिण के स्कूलों और महाविद्यालयों में हिंदी

आंध्र प्रदेश में सन् 1934 में काकिनाडा, विजयवाड़ा, राजमहेन्द्री, गुंटूर जैसे कुछ शहरों में स्थित स्कूलों में पहले पहल हिंदी की पढ़ाई शुरू हुई। पांचवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन यहाँ के स्कूलों में अनिवार्य कर दिया गया। सन् 1937 से आंध्र विश्वविद्यालय में बीकॉम आनर्स के पाठ्यक्रम में हिंदी को अनिवार्य विषय बनाया गया। मैसूर सरकार ने वैकल्पिक भाषा के तौर पर स्कूलों में हिंदी पढ़ाने का प्रावधान किया। सन् 1936 से कर्नाटक के स्कूलों में हिंदी अध्यापन की व्यवस्था होने लगी और अन्य विषयों की तरह हिंदी के लिए भी पूर्णकालिक अध्यापकों की नियुक्ति होने लगी। 1938 से विश्वविद्यालय के पाठयक्रम में भी हिंदी का प्रवेश हो गया। सन् 1937 में प्रांतों के शासन का अधिकार कांग्रेस को मिला तो मद्रास के मुख्यमंत्री राजगोपालाचारी जी ने मद्रास में हिंदी की पढ़ाई की शुरुआत कर दी। एक साथ 125 स्कूलों में उन्होंने हिंदी को अनिवार्य विषय बना दिया। हिंदी प्रचारक स्कूलों के अध्यापक नियुक्त कि गए तो प्रचारकों में नया जोश जगा। सभा की परीक्षाओं में बैठनेवाले छात्रों की संख्या एक लाख के करीब हो गई।

केरल उन दिनों तीन भागों में विभक्त था- तिरुवितांकूर रियासत, कोचिन रियासत तथा मलबार। मलबार मद्रास प्रेसीडेंसी के अधीन था। भाषावार प्रांतों के गठन होने पर 1956 में इन तीनों को मिलाकर केरल राज्य बनाया गया। सन् 1922 में मद्रास स्थित हिंदी प्रचार सभा ने सर्वप्रथम एक मलयालम भाषी युवकदामोदरन उण्णी को केरल में हिंदी प्रचार के लिए भेजा। सेवानिष्ठ हिंदी प्रचारक उण्णीजी के अथक प्रयत्न से केरल के कोने-कोने में हिंदी का प्रचार ज़ोरों

से होने लगा। हिंदी के साथ खादी का भी खूब प्रचार हुआ। इस दौरान केरल में गाँधी, हिंदी, खादी तीनों राष्ट्रीयता के ही प्रतीक बने हुए थे। 1922 से 1932 तक केरल में हिंदी शिक्षण का कार्य हिंदी प्रचार सभाएँ ही करती थीं। इसके बाद केरल के स्कूलों में नियमित रूप से हिंदी पढ़ाने का कार्यक्रम शुरू हुआ। सन् 1928 से कोचिन के स्कूलों में, सन् 1935 से तिरुवितांकूर के स्कूलों में तथा सन् 1936 से मलबार के स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई शुरू हुई। मई 1929 में महामना मदन मोहन मालवीयजी केरल आए और यहाँ के हिंदी प्रचार की प्रगति देखकर उन्होंने अपनी राय यों प्रकट की- मलयालियों की मधुर भाषा मलयालम में संस्कृत शब्दों की भरमार है, अतएव वे आसानी से हिंदी सीख सकते हैं। 1938-39 से केरल में विश्वविद्यालयी स्तर पर भी हिंदी का पठन-पाठन शुरू हुआ।

पत्रकारिता तथा अन्य संचार माध्यम

हिंदी भाषा के प्रचार और हिंदी शिक्षण में आवश्यक सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से दक्षिण भारत में 'हिंदी पत्रकारिता' का श्रीगणेश हुआ था। सन् 1922 में प्रकाशित मासिक पत्रिका 'हिंदी प्रचारक' ही दक्षिण की प्रथम हिंदी पत्रिका है। यह पत्रिका अंग्रेज़ी और हिंदी में छपती थी। अंग्रेज़ी खंड में अंग्रेज़ी के माध्यम से हिंदी का समर्थन किया जाता था और शिक्षित लोगों को हिंदी के प्रति आकर्षित किया जाता था। 1938 में हिंदी प्रचारक पत्रिका का प्रकाशन बंद किया गया और सके स्थान पर दो पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हो गया-'हिंदी प्रचार' समाचार तथा दक्षिण भारत। एक साहित्यिक पत्रिका के रूप में दक्षिण भारत ने दक्षिणी प्रांतों के लेखकों की मौलिक एवं अनूदित रचनाओं को प्रकाशित कर दक्षिण भारत को हिंदी से जोड़ने का सराहनीय प्रयास किया है। सन् 1941 में केरल की प्रथम हिंदी पत्रिका 'हिंदी मित्र' का प्रकासन शुरू हुआ। त्रिशूर से प्रकाशित इस पत्रिका के संपादक श्री.जी.नीलकंठन नायर थे। केवल एक साल तक ही यह पत्रिका चली थी।

दक्षिणी प्रांतों में हिंदी में साहित्य-सृजन का प्रारंभ

यह सुखद आश्चर्य की ही बात है कि स्वतंत्रता आंदोलन तथा राष्ट्रभाषा प्रचार आंदोलन के पहले से ही दक्षिणी प्रांतों में हिंदी भाषा में साहित्य-सृजन का आरंभ हो चुका था। आंध्र भोज के नाम से प्रसिद्ध भोंसलवंशी शाहजी महाराज (सन् 1684-1712) ने हिंदी में यक्षगान नामक कृति की रचना की थी। पंडित पुरुषोत्तमजी के अनेक हिंदी नाटक उपलब्ध होते हैं जिनकी रचना स्वतंत्रता आंदोलन के पूर्व काल में ही हुई थी। इस दौरान कर्नाटक और आंध्र में विरचित कतिपय कृतियों का उल्लेख भी मिलता है। अठारहवीं शती के प्रसिद्ध कोरलीय कवि कुंचन नंपियार ने अपने प्रख्यात तुल्लल् काव्य स्यमंतकं के अंतिम भाग में श्रीकृष्ण और सत्यभामा की शादी के उपरांत संपन्न प्रीतिभोज के प्रसंग में गोसाइयों के वार्तालाप का यों वर्णन किया है:

जय जय राम राम, सीता राम राम
जय जय राम राज, कोदण्ड राम राम।
तुम्हार मुलुक कौन मुलुक
हमार मुलुक काशी मुलुक।

यद्यपि काव्य सौष्ठव की दृष्टि से इन पंक्तियों का विशेष महत्व नहीं है तथापि ऐतिहासिक दृष्टि से इनका महत्व अवश्य है। किसी भी मलयालम भाषी साहित्यकार द्वारा रचित उपलब्ध सर्वप्रथम हिंदी पंक्तियाँ कुंचन नंपियार की ही है। यद्यपि ये मलयालम लिपि में लिखि गई हैं।

तिरुवितांकूर रियासत के महाराजा स्वाति तिरुनाल् ('स्वाति' नक्षत्र में जन्मे) रामवर्मा (1813-1849) ने हिंदी में करीब चालीस गीत रचे हैं। ये गीतकार वस्तुतः जयदेव, विद्यापति, सूर, मीरा आदि की परंपरा में आनेवाले हैं। उनके सभी गीतों के अंतिम चरण में श्रीपद्मनाभ अथवा कोई पर्यायवाची शब्द जुड़ा हुआ है जो अपने कुलदेवता श्री पद्मनाभ के प्रति गीतकार की अटल भक्ति का परिचायक है। केरल विश्वविद्यालय के कार्यवट्टम परिसर में स्थित प्राच्य विद्यामंदिर तथा हस्तलिखित ग्रंथालय में दो शती पूर्व विरचित तीन ताड़पत्रीय हिंदी ग्रंथ 'हिंदी पाठमाला' शीर्षक से उपलब्ध हैं। इनमें एक ताड़पत्रीय ग्रंथ मलयालम भाषियों को हिंदी सिखाने के उद्देश्य से विरचित है जो मलयालम की पुरानी लिपि में है।

दक्षिण में राष्ट्रभाषा प्रचार आंदोलन के दौरान पाठ्य पुस्तकों के रूप में भी कतिपय रचनाएँ प्रकाश में आयीं। दक्षिण भारत के चारों प्रांतों के लेखकों की कविता, निबंध आदि हिंदी प्रचारक पत्रिका में भी प्रकाशित हुए हैं।

दक्षिण में हिंदी की विकास यात्रा-स्वातंत्र्योत्तर काल

स्वातंत्र्योत्तर काल में दक्षिणी प्रांतों में हिंदी का अभूतपूर्व और बहुआयामी विकास हुआ। इस दौरान दक्षिण के चारों प्रांतों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि तथा शोधोपाधि के पाठयक्रम शुरू हुए। तब तक दक्षिण के स्नातक बनारस, अलीगढ़, सागर, लखनऊ आगरा जैसे विश्वविद्यालयों में जाकर ही स्नातकोत्तर उपाधि तथा शोधोपाधि प्राप्त करते थे। हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय में 1949 में हिंदी विभाग शुरू हुआ तथा 1953 से हिंदी में शोध का कार्यक्रम भी चालू हुआ। 1956 में 'आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम्' में तथा 1959 में 'श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति' में स्नातकोत्तर एवं अनुसंधान विभाग खुले। 'वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय' के हिंदी विभाग के प्रथम अध्यक्ष विजयपाल सिंह थे।

1978 में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' के हैदराबाद केंद्र में भी हिंदी उच्च शिक्षा और शोध संस्थान की स्थापना हुई। 'केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद' में भी स्नातकोत्तर तथा शोध के पाठ्यक्रम चलते हैं।

सन् 1950 के अनंतर काल में कर्नाटक में भी विविध विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर उपाधि तथा शोध के पाठ्यक्रम शुरू हुए। 1959 से मैसूर विश्वविद्यालय, 1960 से कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ में तथा 1971 से बैंगलूर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागों में स्नातकोत्तर तथा अनुसंधान के पाठयक्रमों की शुरुआत हुई। तदनंतर अन्य अनेक विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान की सुविधाएँ शुरू की गईं।

'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (मद्रास)' ऐसी संस्था है जिसने न केवल हिंदी प्रचार के क्षेत्र में काम किया है उच्च शिक्षा तथा शोध के क्षेत्र में भी उसकी महती भूमिका रही है। वस्तुतः 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' का इतिहास तमिलनाडु के हिंदी प्रचार-प्रसार का इतिहास है। सन् 1964 में यह सभा 'राष्ट्रीय महत्व की संस्था' घोषित की गई है। तमिलनाडु के विश्वविद्यालयों में मद्रास विश्वविद्यालय, अण्णामलै विश्वविद्यालय, अविनाशिलिंगम विश्वविद्यालय, एम.एस.युनिववर्सिटी आदि में हिंदी में उच्च शिक्षा का प्रावधान है। कहीं-कहीं केवल 'अनुवाद' पर ही पाठ्यक्रम चलता है और छात्रों की संख्या फिलहाल कम है।

हिंदी में उच्च शिक्षा और शोध की दिशा में केरल बहुत ही आगे है। सन् 1957 से केरल विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों में एम.ए पाठ्यक्रम शुरू हुआ। संप्रति केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में तथा चार महाविद्यालयों में हिंदी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तथा अनुसंधान कार्य चालू है। कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में भी एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी. पाठ्यक्रम चलते हैं। इनके अलावा महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय कोट्टयम, कालिकट विश्वविद्यालय, कण्णूर विश्वविद्यालय तथा श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय कालटी एवं उसके अन्य प्रादेशिक केंद्रों में भी हिंदी उच्च शिक्षा के विविध कार्यक्रम चलते हैं। केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड में भी 'तुलनात्मक साहित्य-हिंदी' में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू हो गया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों के दूर शिक्षण संस्थानों की ओर से भी सैकड़ों विद्यार्थी हिंदी एम.ए. परीक्षा में बैठते हैं।

रोज़गारोन्मुख हिंदी पाठ्यक्रम

संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार देवनागरी में लिखित हिंदी संघ की राजभाषा बनी तो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आवश्यक मदद पहुँचाने के लिए 'प्रयोजनमूलक हिंदी' को विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थान दिया गया। दक्षिण के विश्वविद्यालयों ने स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के परंपरागत पाठयक्रमों को भी प्रश्रय दिया। केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में 1968 से 'अनुवाद और प्रशासनिक पत्र व्यवहार' में प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम शुरू हुआ। 1971 में कोचिन विश्वविद्यालय तथा कालिकट विश्वविद्यालय ने भी यह पाठ्यक्रम चलाया। रोज़ी रोटी के आकर्षण में कई छात्र इन पाठ्यक्रमों में भर्ती हुए तथा रोज़गार प्राप्त करने में वे सफल भी हुए। अब भी ये पाठ्यक्रम विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों में चालू हैं।

दक्षिणी प्रांतों में हिंदी में साहित्य-सृजन

हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त दक्षिणी प्रांतों के लेखकों ने हिंदी को भी अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया तो हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में सृजन-कार्य तेज़ गति से होने लगा। पहले विविध पत्र-पत्रिकाओं में दक्षिण के हिंदी लेखकों की कविता, कहानी, निबंध आदि प्रकाशित होकर आते थे। सन् साठ के बाद पुस्तक रूप में कई रचनाएँ प्रकाश में आईं। इस दौरान हिंदी की विविध विधाओं में अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का प्रसार करनेवालों में आलूरि वैरागी, सुब्बाराव, पांडुरंग राव, सूर्यनारायण मूर्ति, आदेश्वर राव, सरगु कृष्णमूर्ति, रमेश चौधरी 'अरिगपूडि', बालशौरि रेड्डी, डॉ.भीमसेन निर्मल, सुब्रह्मण्य विष्णुप्रिया, पी.के.बालसुब्रह्मण्यं, डॉ.सुंदरम्, शौरिराजन, डॉ.शेषन, पं.नारायण देव, पी.नारायण, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, डॉ.गोविन्द शेनाय आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। कहानी तथा उपन्यास लेखकों में अरिगपूडी और बालशैरी रेड्डी को विशेष ख्याति मिली है। 'नाटक' रचयिताओं में डॉ.एन.चन्द्रशखरन नायर खूब ख्यात हैं तो 'ललित निबंध' लेखन में डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर बहुचर्चित हैं। सन् उन्नीस सौ सत्तर के बाद आलोचना के क्षेत्र में कई लेखक सक्रिय हुए। उनकी सैकड़ों किताबें प्रकाशित भी हैं। चारों दक्षिणी प्रांतों में इतनी विपुल मात्रा में साहित्य की विविध विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं कि एक

लेख में उनका नामोल्लेख तक असंभव प्रतीत होता है।

अनुवाद

अनुवाद द्वारा साहित्यिक आदान-प्रदान का सराहनीय कार्य भी दक्षिण में खूब चलता है। हिंदी से दक्षिणी भाषाओं में तथा दक्षिण की भाषाओं से हिंदी में कई उत्कृष्ट कृतियों का अनुवाद करके हिंदी तथा दक्षिण भारतीय भाषाओं के समन्वय की दिशा में दक्षिणी लेखकों ने विशेष योगदान दिया है। उनके प्रयास से कबीर, सूर, तुलसी जैसे कवि, प्रेमचंद, यशपाल जैसे कथाकार दक्षिण में सुपरिचित हो चुके हैं तो दक्षिण के प्रमुख साहित्यकारों का परिचय हिंदी जगत को देने का कार्य भी दक्षिण के अनुवादकों के द्वारा संपन्न हुआ है।

तुलनात्मक अध्ययन तथा तुलनात्मक शोध

तुलनात्मक अध्ययन तथा तुलनात्मक शोध कार्य दक्षिण के हिंदी लेखकों का प्रिय विषय रहा है। इन तुलनात्मक अध्ययनों के द्वारा हिंदी तथी दक्षिण भारतीय भाषाओं के भाषाई तथा साहित्यिक संबंधों को सुदृढ़ साबित करने के कई प्रयास हुए हैं। मैक्समूलर ने कहा है "All higher knowledge is gained by comparison and rests on comparison"/ यानी सारे उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति तुलना से होती है और तुलना पर निहित है। इस कथन को सार्थक करते हुए तुलनात्मक अध्ययनों ने ज्ञान के क्षेत्र को असीम बना दिया है। दक्षिण में स्वतंत्र रूप में तथा विश्वविद्यालयों के एम.फिल लघु शोध प्रबंध तथा पी एच.डी शोध प्रबंधों के रूप में तुलनात्मक अध्ययन के विविध आयाम खुले हैं। हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं में विशेषकर तेलुगु, कन्नड़, मलयालम के बीच तुलनात्मक अध्ययन का कार्य प्रभूत मात्रा में हुआ है और हो रहा है। भक्ति साहित्य, स्वतंत्रता आंदोलन, नवजागरण,स्वच्छंदतावाद, प्रगतिवाद, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, पारिस्थितिक विमर्श, आदिवासी विमर्श, सूचना प्रौद्योगिकी आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर तुलनात्मक अध्ययन का ज़्यादा काम हुआ है और हो भी रहा है। केरल के श्री भास्करन नायर ने हिंदी और मलयालम के मुख्य कृष्णभक्त कवियों का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध-कार्य करके सन् 1956 में लखनऊ विश्वविद्यालय से पी एच.डी. की उपाधि पाई। हिंदी में शोधोपाधि प्रप्त सर्वप्रथम दक्षिण भारतीय होने का श्रेय उनको प्राप्त है। इसके अनंतर दक्षिण के विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों में हिंदी तथा तेलगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम जैसी द्राविड़ परिवार की भाषाओं के बीच के कई भाषाई और साहित्यिक तुलनात्मक शोधकार्य संपन्न हुए। कतिपय शोध कार्यों के शीर्षक उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं-

तेलगू और हिंदी के संज्ञा शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन।

हिंदी और कन्नड़ की समान शब्दावली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन।

आधुनिक हिंदी तथा तमिल की समान शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन।

हिंदी तथा मलयालम की समान शब्दावली- एक भाषाशास्त्रीय अध्ययन।

हिंदी और तेलुगू के वैष्णव भक्ति साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।

सूर और पोतन्ना की भक्ति-भावना का तुलनात्मक अध्ययन।

हिंदी और कन्नड़ में कृष्णभक्ति आंदोलन का तुलनात्मक अध्ययन।

हिंदी और तमिल के भक्ति साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।

हिंदी और मलयालम में कृष्ण भक्ति साहित्य।

आधुनिक हिंदी और मलयालम काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ।

हिंदी और मलयालम के समस्या नाटक।

अज्ञेय और अय्यप्प पणिक्कर की कविता आदि। इन तुलनात्मक अध्ययनों नें हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं के बीच भाषाई एवं साहित्यिक अंर्तसंबंधों की परतों को खोलने का सार्थक प्रयास किया है, किंतु खेद की बात है कि इनमें अधिकांश शोध प्रबंध अप्रकाशित हैं।

पत्र-पत्रिकाएँ, फिल्म तथा अन्य संचार माध्यम

दक्षिण के चारों प्रांतों में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में स्वातंत्र्य पूर्व काल से ही पत्र-पत्रिकाएँ बड़ी भूमिका निभा रही थीं। बीसवीं शती के तीसरे-चौथे दशक से आकाशवाणी ने दक्षिणी प्रांतों में हिंदी के कार्यक्रम शुरू किए। आकाशवाणी से प्रसारित हिंदी-पाठ सुनने के लिए बड़ी संख्या में हिंदी प्रेमी और विद्यार्थीगण इकट्ठे होते थे और हिंदी सीख लेते थे। हिंदी फिल्मों और फिल्मी गीतों ने भी दक्षिण भारत के जनमानस को खब मोह लिया था। स्वातंत्र्योत्तर काल में संचार माध्यमों ने क्रांति ही मचाई और दूरदर्शन से संप्रेषित रामायण, महाभारत आदि पर बने धारावाहिकों का पूरे दक्षिण में हार्दिक स्वागत हुआ था। वर्तमान दौर में भी विविध चैनलों द्वारा संप्रेषित हिंदी कार्यक्रमों के दर्शक दक्षिण भारत में काफी मात्रा में मौजूद हैं।

दक्षिण के तमिलनाटु, केरल तथा कर्नाटक से कोई दैनिक पत्र हिंदी में प्रकाशित नहीं होता है। केवल हैदराबाद से एक दैनिक पत्र निकलता है - 'डेली हिंदी मिलाप'। वर्ष 1948 में एक और हिंदी दैनिक 'स्वतंत्रवार्ता' शुरू हुआ है। मासिक, द्वैमासिक तथा त्रैमासिक पत्रिकाएँ चारों प्रांतों से प्रकाशित होती हैं। केरल से नियमित रूप से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाएँ हैं, 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' की केरल शाखा की मासिक पत्रिका केरल भारती, केरल हिंदी प्रचार सभा की मासिक पत्रिका 'केरल ज्योति', 'हिंदी विद्यापीठ, तिरुवनन्तपुरम' की मासिक पत्रिका 'संग्रथन', 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका' तथा 'अखिल भारतीय हिंदी अकादमी' की शोध पत्रिका 'शोध सरोवर पत्रिका'। इनमें आर्थिक कठिनाई के कारण 'संग्रथन' का प्रकाशन मार्च 2015 अंक के साथ बंद हो गया था। जनवरी 2018 से इसका पुनः प्रकाशन शुरू हो गया है। कोचिन विश्वविद्यालय से 'अनुशीलन' तथा केरल विश्वविद्यालय से 'शोध दर्पण' जैसी अनियतकालीन शोध पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं।

दक्षिणी प्रांतों में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन

दक्षिण के चारों प्रांतों में केंद्र सरकार के कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि में राजभाषा का कार्यान्वयन सुचारु रूप से चलता है। यही कारण है कि संसदीय निरीक्षण समितियों की ओर से यहाँ के कार्यकलापों की भूरि-भूरि प्रशंसा होती है तथा यहाँ के कार्यालय राष्ट्रीय स्तर के सम्मान व पुरस्कार के अधिकारी होते हैं। इनमें से कतिपय कार्यालयों की ओर से हिंदी में गृह पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं। हिंदी दिवस, विश्व हिंदी दिवस आदि मनाने के साथ हिंदी में अखिल भारतीय स्तर के सम्मेलन-समारोह भी यहाँ आयोजित होते हैं।

भविष्य की दिशाएँ

दक्षिण भारत के चारों प्रांतों में हिंदी के अतीत और वर्तमान का यह दिग्दर्शन इस बात का खुलासा करता है कि दक्षिण में अतीत ने हिंदी के लिए उचित पृष्ठभूमि तैयार की थी तथा वर्तमान दौर में प्रचार-प्रसार, शिक्षा, उच्च शिक्षा, शोध, पत्रकारिता आदि विविध आयामों में हिंदी ने बड़ी प्रगति हासिल की है। राजनीतिक कारणों से तमिलनाडु में शिक्षा, उच्च शिक्षा आदि क्षेत्रों में यद्यपि ह्रास दृष्टिगत होता है तो भी वहाँ 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' की परीक्षाओं में तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय से संचालित पाठ्यक्रमों में हज़ारों की तादाद में छात्र हिस्सा लेते हैं। दक्षिण के चारों प्रांतों में मौलिक लेखन, अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन आदि के द्वारा हिंदी साहित्य को संपुष्ट करने का काम खूब हो रहा है। हिंदी में भारतीय सामासिक संस्कृति की सच्ची अभिव्यक्ति तभी होगी जब उसमें भारत के अन्यान्य प्रांतों में लिखित साहित्य भी आदरपूर्वक समाहित होगा जिसमें क्षेत्रीय संस्कृतियों की महक बरकरार रहती है।

1.दक्षिणी प्रांतों में हिंदी की स्थिति को और बेहतर बनाने हित कतिपय दिशा-निर्देश यहाँ प्रस्तुत हैं।

2.दक्षिणी प्रांतों में पहली कक्षा से ही हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ाने का प्रावधान हो।

3.दक्षिण में बोलचाल की हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास हो।

4.नए-नए रोज़गारोन्मुखी पाठ्यक्रम हिंदी माध्यम से शुरू करने का प्रयास हो। यथा-विज्ञापन और हिंदी, पर्यटन क्षेत्र में हिंदी, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र और हिंदी, संचार माध्यम और हिंदी आदि।

5.अनुवाद और तुलनात्मक अध्ययन को बढ़ावा देने लायक बृहद् योजनाएँ बनाएँ।

6.हिंदी साहित्य के इतिहास का पुनर्लेखन हो।

उत्तर और दक्षिण के विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों के बीच पारस्परिक अकादमिक संबंध स्थापित हो जाए।

संदर्भ :

1.केरल के हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास- डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर, केरल हिंदी साहित्य अकादमी, 1989, 2012

2.केरल में हिंदी भाषा और साहित्य का विकास- डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1996

3.केरल के हिंदी साहित्य का इतिहास- डॉ.पी.लता, लोकभारती प्रकाशन, 2016

4.दक्षिण में हिंदी प्रचार आंदोलन का इतिहास - एन.वेंकटेश्वरन, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, 1990

5.दक्षिण भारत के हिंदी प्रचार आंदोलन का समीक्षात्मक इतिहास- पी.के.केशवन नायर, हिंदी साहित्य भंडार, 1963

7.राष्ट्रभाषा प्रचार का इतिहास (सं.)- गंगाशरण सिंह, अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ, नई दिल्ली, 1982

8.हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास (सं.) डॉ.नगेंद्र, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, वि. सं.2036

♦ पूर्व प्रोफसर, डीन,
केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम।
मो 93491932722

भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन एवं अनुवाद

♦ डॉ.बाबू.के.विश्वनाथन

अनुवाद की प्रक्रिया, परंपरा एवं उद्देश्य पर बल देते हुए पूरी निष्ठा के साथ, पूरे समर्पण के साथ अगर अनुवाद करने का प्रयास किया जाए तो अवश्य 'अनुवाद' की बहुआयामिता एवं बहुस्वरता बढ़ सकती हैं।

अनुवाद किसी एक भाषा में अभिव्यक्त भावों, विचारों, अनुभवों एवं अनुभूतियों को उस भाषा की विशिष्टताओं के साथ किसी दूसरी भाषा में उतारने की साधना है। साथ ही साथ वह तथ्यों की उलझन से समाज को मुक्त करने का एक सकारात्मक उपक्रम भी है। विभिन्न भाषाओं तथा भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन से संपृक्त एक प्रक्रिया होने की वज़ह से भाषिक प्रयोग की विभिन्न स्थितियों एवं भाषाविज्ञान के विभिन्न पहलुओं के विशेष संदर्भ में अनुवाद को समझने की कोशिश करना सर्वथा समीचीन रहेगा।

भाषा भावों, विचावों, अनुभवों, अनुभूतियों के संप्रेषण का एक विशिष्ट एवं सशक्त माध्यम है, जिसका मुख्य उद्देश्य होता है वक्ता के मन की तुष्टि। अगर आप मानते हैं कि भाषा के बिना मनुष्य से संबद्ध किसी भी क्षेत्र की उन्नति लगभग असंभव है तो इसे स्वीकारने में आपको उतनी बड़ी दिक्कत नहीं होगी कि 'भाषाविज्ञान' का भी आधुनिक समाज में महत्व कुछ कम नहीं है।

विज्ञान तो ' विशिष्ट ज्ञान' होता है। 'विशिष्ट ज्ञान' का मतलब है 'किसी भी वस्तु या क्षेत्र के गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन से प्राप्त ज्ञान'। इस दृष्टि से 'भाषाविज्ञान' पर विचार करें तो यह भाषा के सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन से प्राप्त ज्ञान निकलता है और भाषा का, संसार के समस्त व्यक्तियों से संबंध रहने के कारण यों मानने में भी कोई आपत्ति नहीं कि यह संसार के प्रत्येक व्यक्ति से संबद्ध एक वैज्ञानिक प्रकार है।

भाषा की शुरुआत से लेकर उसके अद्यतन विकास तक के जितने भी पहलू हैं, उन सभी पहलुओं का भाषाविज्ञान से संबंध रहा है। वस्तुतःयों कहने में हमें कोई हिचक नहीं होती कि भाषाविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसका प्रयोग अथवा उपयोग प्रत्येक व्यक्ति जाने अनजाने में करता है। बच्चों की चेष्टाओं को मालूम करने का प्रयास करते समय, किसी को भाषा सिखाते समय, अल्पबुद्धियों की भाषा को समझने की कोशिश करते समय वास्तव में भाषाविज्ञान का ही उपयोग किया जा रहा है।

'भाषाविज्ञान' भाषा के इतिहास को भविष्य से मिलाने का प्रयास है, जिसमें भाषा की संभावनाओं, विशेषताओं व प्रवृत्तियों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया जाता है। भाषा की ध्वनि, शब्द, अर्थ, रूप, वाक्य, लिपि आदि अलग-अलग तत्वों पर विस्तार से विचार करते हुए भाषाविज्ञान भाषा के विकास के लिए कई दिशाओं को खोल देता है और इन दिशाओं से होकर भाषा-अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही है जिसके एक सुपरिणाम के रूप में 'अनुवाद'को स्वीकारा जा सकता है। कहने की कोई

आवश्यकता नहीं कि किसी भी समाज एवं संस्कृति के अध्ययन के लिए भाषा से भी सहायता ली जाती है और इस सहायता के मूल में निहित भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन एवं अनुवाद को भी इस अवसर पर किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता।

भाषा से संबद्ध जितने भी उपकरण विकसित किए जा रहे हैं उनके निर्माण एवं प्रयोग के पीछे भी भाषाविज्ञान की भूमिका बनी रहती है और भाषा की वैज्ञानिक प्रगति के संदर्भ में अनुवाद का भी अंशदान कम महत्वपूर्ण नहीं है।

'अनुवाद' एवं 'भाषाविज्ञान' के पारस्परिक संबंध की गहराई से चर्चा करने पर यह स्पष्ट हो जाएगा कि 'भाषाविज्ञान' के कई सारे प्रकरणों के होने के बावजूद इस संदर्भ में 'अनुवाद' का इतना महत्व क्यों है।

'अनुवाद' में दो भाषाओं पर विचार किया जाताहै। स्रोत तथा लक्ष्य कही जानेवाली दोनों भाषाओं की विशेषताओं को बड़ी सूक्ष्मता से पहचानकर दोनों में वर्णित विचारों को परस्पर एक दूसरे के निकट लाना ही 'अनुवाद 'का लक्ष्य होता है। इससे यह स्पष्टतः विदित होता है कि 'अनुवाद' को सार्थक एवं सफल बनाने के लिए अनुवादक के लिए यह भी अनिवार्य है कि वह दोनों भाषाओं की वैज्ञानिक विशिष्टियों को पूरी गंभीरता से पहचान ले और समझ ले। यह उतना आसान कार्य नहीं होता, क्योंकि केवल तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य से नहीं व्यतिरेकी दृष्टिकोण से भी उसपर विचार करना आवश्यक हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो भाषावैज्ञानिक तथ्यों की नींव पर ही 'अनुवाद' अधिष्ठित रहता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार विभिन्न तत्वों के आधार पर कहानी, उपन्यास, नाटक आदि का सृजन होता है। हाँ! अवश्य यह जोड़ा जा सकता है कि अनुवादक के लिए यह काम और अधिक दुष्कर होता है, क्योंकि दुनिया की प्रत्येक भाषा की वैज्ञानिक विशिष्टताएँ उसकी अपनी रहती हैं। यह तो सही है कि एक ही भाषा परिवार के अंतर्गत आनेवाली भाषाओं के अनुवाद के संदर्भ में कठिनाई कुछ कम हो सकती है, लेकिन तब भी प्रयोग की दृष्टि से जो परेशानियाँ बनी रहती हैं उनको भुलाया नहीं जा सकता। भाषा के वैज्ञानिक तत्वों का, उन तत्वों की विशेषताओं को और उनकी संभावनाओं को जानने में रुचि रखनेवाला और उनके व्यावहारिक प्रयोग के प्रति जिज्ञासा रखनेवाला कोई अनुवादक ही यहाँ सचमुच सफल एवं कुशल निकल सकता है। वस्तुतः 'अनुवाद' की सफलता अनुवादक की हैसियत से ही नहीं बल्कि भाषावैज्ञानिक की हैसियत से भी आँकी जानी चाहिए।

किसी व्यक्ति द्वारा स्रोतभाषा में बताई हुई बात को दूसरे व्यक्ति द्वारा लक्ष्यभाषा में उतारने का प्रयास ही सामान्यतः 'अनुवाद' कहा जाता है। परंतु इसका मतलब कदापि यह नहीं कि 'अनुवाद' के लिए हमेशा दो व्यक्तियों की ज़रूरत रहती है। किसी भी कृति का मूल रचनाकार उस कृति का अनुवाद भी कर सकता है लेकिन ऐसे अनुवादकों की संख्या परिमाण की दृष्टि से बहुत कम है। खैर, इस प्रकार एक ही व्यक्ति द्वारा या एकाधिक व्यक्तियों द्वारा अनुवाद होते समय मूल कृति के साथ रचयिता के व्यक्तित्व का जो सबंध है उस सबंध को भी अनुवादक को 'अनुवाद' में उतारना पड़ता है। अर्थात् भाषा, रचना और रचनाकार के व्यक्तित्व के माध्यम से किसी कृति का किसी समाज पर जो प्रभाव पड़ता है उस प्रभाव को दूसरी भाषा एवं

दूसरे रचनाकार के व्यक्तित्व के माध्यम से दूसरे समाज में 'अनुवाद' में उतारा जाता है। थोड़ा सोच लें तो स्पष्ट हो जाएगा कि कृति (यहाँ 'कृति' से मतलब 'अक्षरबद्ध आशय' से है) ही दोनों में अन्ततः रह जाती है। तात्पर्य यह है कि कृति को छोड़कर भाषा, रचनात्मक व्यक्तित्व तथा समाज ये तीनों 'अनुवाद' के संदर्भ में भिन्न रह जाते हैं। इसे और भी स्पष्ट किया जाए तो यों बताया जा सकता है-

1. स्रोतभाषा कृतिकार का व्यक्तित्व + मूल कृति (अक्षरबद्ध आशय) इनका समन्वित प्रभाव = स्रोतभाषा भाषियों का समाज

2. लक्षभाषा + अनुवादक का व्यक्तित्व + अनुदित कृति (अनुदित अक्षरबद्ध आशय) = इनका समन्वित प्रभाव = लक्ष्यभाषा भाषियों का समाज

यहाँ ध्यातव्य बात यह है कि भाषा के साथ रचनाकार के व्यक्तित्व एवं रचना का सही समन्वय होने पर ही समाज पर उसका असर पड़ता है। अनुवादक के पास अपनी भाषा एवं अपने व्यक्तित्व का प्रयोग करने की कोई आज़ादी नहीं है तो उसका अपने समाज पर इसका क्या असर पड़ सकता है? शायद इस ओर इंगित करके ही यों बताया गया था कि 'असफल साहित्यकार ही अनुवादक बनता है।' मगर यह कथन पूर्णतः सही एवं निरापद नहीं है। ऐसा आरोप लगानेवालों को पहले यह जान लेना चाहिए कि 'अनुवाद' विज्ञान एवं शिल्प होने के साथ ही साथ एक कला भी है। मैं इसे अपने आपको बाँधने की कला कहना चाहूँगा, क्योंकि यहाँ अनुवादक को अपनी भाषिक विशिष्टताओं से यहाँ तक कि अपने व्यक्तित्व से भी अलग होना पड़ता है। अपने आपको बाँधने की यह कला उतनी सरल एवं सीधी भी नहीं होती। आप रस्सी लेकर अपने आपको बाँधने की कोशिश करके तो देखिए, ठीक तरह से बाँध नहीं पाएँगे। अनुवादक की स्थिति किसी तस्वीर को देखकर वही तस्वीर बनाने को उद्यत चित्रकार और किसी नृत्य को देखकर वही नृत्य प्रस्तुत करने में मग्न कलाकार की जैसी हो जाती है जहाँ मूल तस्वीर एवं मूल नृत्य के गुणों को उसी रूप में देखने की हम हमेशा उम्मीद नहीं रख सकते। यदि यह प्रयास मूल से भी श्रेष्ठ निकला तब भी हम उसे अनुकरण कहेंगे, अनुकरण की दृष्टि से देखेंगे और उस रूप में उसका मूल्यांकन करेंगे। कहने का अर्थ यह निकलता है कि अनुवाद को विशिष्ट विधा के रूप में पूर्णतः स्वीकृति प्राप्त होनी चाहिए। उसकी क्षमता उस श्रेणी के अन्य कलाकारों के साथ परखी जानी चाहिए। यह तो सर्वथा स्वीकृत तथ्य है कि साहित्यिक (सर्जनात्मक साहित्य के) अनुवाद की तुलना में सूचनात्मक (तथ्यपरक) साहित्य का अनुवाद अधिक आसान होता है। इसका कारण यही है कि सूचनात्मक साहित्य में रचनाकार के व्यक्तित्व का कोई महत्व नहीं रहता और अर्थ की गहराइयों में डुबकियाँ लगाने की भी वहाँ कोई आवश्यकता नहीं रहती।

'अनुवाद' को एक असफल कार्य मानकर उसके विपक्ष में भी कई धारणाएँ प्रचलित हो चुकी हैं। 'शांवर मैन' ने तो यहाँ तक कह डाला था कि 'अनुवाद ' पाप है परंतु इसे कभी भी असफल कार्य नहीं माना जाना चाहिए। उसकी सफलता 'एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान एवं सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में उतारने' (डॉ.भोलानाथ तिवारी / अनुवाद विज्ञान/पृ 28) के प्रयास की दृष्टि से है और इस

परिदृश्य में उसका मूल्यांकन वस्तुतः किया जाना चाहिए। कम से कम यह तो नहीं भूलना चाहिए कि 'अनुवाद ' ने विश्व को एक करके रख दिया है। बहरहाल विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में आज जो प्रगति हम देख रहे हैं उसका 'अनुवाद' से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध तो रहता है ही।

'अनुवाद' के संदर्भ में उल्लेख्य एक और पक्ष यह है कि 'प्रयोग की मात्रा' की दृष्टि से अविकसित या कम विकसित भाषा से विकसित भाषा में अनुवाद करना थोड़ा आसान हो जाता है जबकि इस दृष्टि से विकासित भाषा से अविकसित भाषा में अनुवाद करना थोड़ा मुश्किल। इसका कारण यही होता है कि विकसित समझी जानेवाली भाषाओं की संकल्पनाएँ, धारणाएँ आदि आधिक विकसित रहती हैं अतः अविकसित समझी जानेवाली भाषाओं से अनुवाद के संदर्भ में वहाँ कोई विशेष आपत्ति नहीं रहती। पूर्णतः सही शब्द न मिलने पर भी वहाँ अनुवादक को थोड़ी जगह प्राप्त होती है। लेकिन इसके विपरीत विकसित भाषा से अविकसित भाषा में अनुवाद करते समय अनुवादक के मार्ग में काफी अड़चनें आ जाती हैं। विकसित भाषा में जितनी भी बातें उठाई जाती हैं उन सबको अविकसित भाषा में उतारना काफी कठिन हो जाता है। अनुवाद विशेषज्ञ 'डॉ.एन.आई. विश्वनाथ अय्यर' ने इसे छोटे-बड़े बर्तनों और उनमें भरी वस्तुओं के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश की है।

यह तो सही है कि 'पाठ-पठन, पाठ-विश्लेषण, भाषांतरण, समायोजन, मूल से तुलना, अनुवाद-प्रक्रिया के इन पाँच सोपानों से गुज़रते समय अनुवादक को कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इन समस्याओं का पूर्णत समाधान निकालना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। लेकिन इसे कभी भी अनुवादक की असफलता नहीं मानी जानी चाहिए। इसे केवल 'अनुवाद' की विडंबना के रूप में देखा जा सकता है।

यह सही है कि भाषा के वैज्ञानिक तत्वों के प्रति विशेष ध्यान देकर यदि 'अनुवाद' किया जाए तो काफी हद तक वह सफल हो सकता है । लेकिन यह उतना सरल नहीं, क्योंकि भाषा के वैज्ञानिक पक्ष का विकास प्रत्येक भाषा में विशेष स्थितियों में होता है और आधारभूत तत्व एक होने के बावजूद वहाँ प्रयोग की दृष्टि से कोई एकरूपता प्राप्त नहीं होती। यथासाध्य प्रयास ही यहाँ अनुवाद को सफल बनाने में सहायक हो सकता है। अनुवाद की प्रक्रिया, परंपरा एवं उद्देश्य पर बल देते हुए पूरी निष्ठा के साथ, पूरे समर्पण के साथ अगर अनुवाद करने का प्रयास किया जाए तो अवश्य 'अनुवाद' की बहुआयामिता एवं बहुस्वरता बढ़ सकती हैं। साथ में यह भी अनिवार्य है कि अनुवाद के आस्वादन के प्रति पाठकों का दृष्टिकोण सकारात्मक एवं समुचित हो।

संदर्भ

अनुवाद विज्ञान-डॉ.भोलानाथ तिवारी
अनुवाद कला- डॉ.एन.आई.विश्वनाथ अय्यर
अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ - डॉ.भोलानाथ तिवारी
प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ.दंगल झाल्टे
सामान्य भाषाविज्ञान - श्री बाबूराम सक्सेना

◆ एसोसिएट प्रोफर, हिन्दी विभाग,
श्री. शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय,
कालटी, केरल

वैश्विक स्तर पर हिन्दी की स्वीकृति

♦ डॉ.आशा एस नायर

मनुष्य की अस्तिकता को सुरक्षित रखने केलिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। भाषा विचारों की अभिव्यक्ति के साथ संस्कृति और सभ्यता का वहन भी करती है। हिन्दी भाषा अपनी लिपि और उच्चारण के तौर पर वैज्ञानिक धरातल को छू ली है।

दुनिया भर लगभग आठ हज़ार भाषएँ किसी न किसी तरह बोली और समझी जाती हैं, जिनमें से बहुतों का अस्तित्व खतरे में है। ऐसे माहौल में हिन्दी अपना प्रचार-प्रसार बढ़ाती रहती है। हिन्दी संपर्क भाषा, सामाजिक भाषा, राज-भाषा के होने के साथ-साथ वैशिक भाषा के रूप में भी ख्याति-प्राप्त है।

हिन्दी भाषा की पहचान दुनिया भर में कराने के उद्देश्य से 10 जनवरी 1975 को प्रथम विश्व-हिन्दी सम्मेलन का शुभारम्भ नागपुर में हुआ था। प्रतिवर्ष 10 जनवरी का दिन विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सन् 2006 में लिया गया था। 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' और 10 जनवरी को 'विश्व दिवस' मनाने लगे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा सीखने-जाननेवालों की संख्या में वृद्धि हो रही है। वैशिक स्तर पर हिन्दी का स्थान तीसरा है। प्रवासी भारतीय हिन्दी भाषा की संस्कृति को उजागर करने की कोशिश करते रहते हैं। विश्व के करीब 140 राष्ट्रों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा की शिक्षा दी जाती है। अमेरिका में ही 80 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। जापान में हिन्दी की पढ़ाई सन् 1908 में प्रारम्भ हुई। वहाँ व्यापार करनेवाले लोग ज़्यादा पढ़ाई करते हैं। इस तरह रूस, मॉरीशस, श्रीलंका, फिजी, उज़बेकिस्तान जैसे कई राष्ट्रों में हिन्दी की स्नातकोत्तर पढ़ाई की सुविधा है।

विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कई संस्थाएँ कार्यरत हैं। अमेरिका में अखिल भारतीय हिन्दी समिति, हिन्दी न्यास, अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति आदि प्रमुख हैं। डरबन में भी हिन्दी प्रचार के लिए हिन्दी भवन है। हिन्दी प्रचारिणी सभा, विश्व हिन्दी साचवालय, मॉरीशस हिन्दी संस्थान आदि कार्यरत हैं। नदिरलैंड का हिन्दी परिषद, सिंगपूर की हिन्दी सोसइटी, कनाडा का विश्व हिन्दी संस्थान, यू.के की इन्टरनेशनल हिन्दी सोसाइटी, वर्जिनिया की अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति आदि विश्व भर में हिन्दी भाषा का प्रचार एवं विकास में कार्यरत हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी फिल्मों की भूमिका महत्वपूर्ण है। फिल्मों के ज़रिए हिन्दी भाषा और भारत की संस्कृति का आदान-प्रदान होता है। सभी भारतवासी हिन्दी भाषा की विकास-यात्रा में भागीदार होने की कोशिश करते हैं। इसके परिणामस्वरूप दुनिया भर के लोगों के दिल में भारत की संस्कृति और हिन्दी भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न हुआ है। हिन्दी भाषा विश्व-कल्याण के क्षेत्र में मील का पत्थर बनेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

भारतीय विश्व में जहाँ भी जायें वहाँ हिन्दी भाषा तथा भारतीय संस्कृति सहज ही उनके साथ जाती हैं। हिन्दी ही प्रवासी भारतीयों की संपर्क भाषा है।

♦ अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
एन.एस.एस. महिला महाविद्यालय
ट्रिवेन्द्रम

व्यतिरेकी भाषा विज्ञान : मलयालम और हिन्दी के अनुवाद के संदर्भ में

♦ डॉ.षीबा शरत एस

व्यतिरेकी भाषा विज्ञान में दो या दो से अधिक भाषाओं की तुलना करके उनकी असमानताओं का पता लगाया जाता है। साधारण रूप से दो भाषाओं में समानताओं की अपेक्षा असमानताएँ ही अधिक होती हैं। इन व्यतिरेकी बिन्दुओं का सही और सूक्ष्म ज्ञान अनुवादक केलिए परम आवश्यक होता है। यह व्यतिरेकी विश्लेषण अनुवादक के रास्ते में आनेवाली कठिनाइयों की पूर्ण सूचना दे देता है। यह पूर्व ज्ञान अनुवाद कार्य में बहुत अधिक सहायक सिद्ध होता है।

दो भाषाओं के बीच व्यतिरेकी तत्व ध्वनि, उच्चारण, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ आदि सभी क्षेत्रों में पाया जाता है। यही नहीं, दो भाषाओं के मुहावरों, कहावतों, वाक्यों की काल-रचना आदि में भी ऐसे व्यतिरेकी तत्व मिलते हैं।

ध्वनि का व्यतिरेक

ध्वनि का व्यतिरेक अनुवाद-कार्य में बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न करता है। हिन्दी-तमिल, हिन्दी-मलयालम ध्वनियों की तुलना करने पर पता चलता है कि हिन्दी-मलयालम ध्वनियों के उच्चारण में अंतर होता है। उदाः मलयालम में पद मध्य का व्यंजन ढीला उच्चरित होता है, जबकि हिन्दी में हर व्यंजन का पूरे ध्वनि मूल्य के साथ सही उच्चारण होता है। यह उच्चारण भेद एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में लिखने में बाधा उपस्थित करता है। तमिल-मलयालम में 'र' के दो रूप होते हैं- 'ര', 'റ' तमिल और हिन्दी में इन दोनों केलिए एक ही चिह्न इस्तेमाल करता है। मलयालम में 'म', 'ङ' इन दोनों अनुनासिक व्यंजनों का बहुत अधिक प्रयोग होता है। हिन्दी में इनका बहुत सीमित प्रयोग होने के कारण भाषा वैज्ञानिक इनके स्थान पर 'न' का प्रयोग करने के पक्ष में है। जैसे- कन्धा, (कंधा), अन्जन (अंजन) आदि। हिन्दी में ऐसे स्थानों पर अनुस्वार से काम लिया जाता है। मलयालम से हिन्दी में अनुवाद करते समय यह परिस्थिति बहुत बड़ी बाधा उपस्थित करती है। हिन्दी और अंग्रेज़ी की तुलना करने पर इसी तरह के बहुत सारे व्यतिरेक पाए जाते हैं। उदाहरणार्थ-

1. अंग्रेज़ी लेखन-प्रणाली में महाप्राण व्यंजन का विधान नहीं है। एक ही व्यंजन स्थानभेद से अल्पप्राण और महाप्राण उच्चरित होता है।
2. एक ही ध्वनि के लिए अंग्रेज़ी में एकाधिक लिपि चिह्न पाये जाते हैं। जैसे - हिन्दी 'क' केलिए अंग्रेज़ी में K, C, Q तीन चिह्न पाए जाते हैं।
3. कुछ व्यंजनों का ध्वनि मूल्य निश्चित नहीं है। जैसे, 'C' का उच्चारण क, च, स, तीनों रूपों में हो सकता है।
4. अंग्रेज़ी स्वर a, e, i, o, u का ध्वनिमूल्य भी निश्चित नहीं है। जैसे, अंग्रेज़ी 'i' का उच्चारण 'इ'

और 'ऐ' दोनों रूपों में हो सकता है। 'u' कभी 'अ' होता है कभी 'उ'। इन परिस्थितियों के कारण दोनों भाषाओं के बीच अनुलेखन में बड़ी कठिनाई होती है।

शब्दों के स्तर पर व्यतिरेक

अनुवाद के क्षेत्र में शब्दों के स्तर पर कई कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। केरल का एक सामान्य आहार है 'कञ्ञि'। इसके लिए किसी अन्य राज्य भाषाओं में शब्द ढूँढ़ना मुश्किल है, क्योंकि यह केरल की अपनी चीज़ है। प्रत्येक प्रदेश के अपने नित्य व्यवहार के शब्द होते हैं, जो सभ्यता और संस्कृति के शब्द होते हैं। ऐसे शब्दों केलिए दूसरी भाषाओं समानार्थी शब्द ढूँढ़ना मुश्किल है। संस्कृत का शब्द 'पशु' जानवर का सूचक है। तमिल, मलयालम तक पहुँचकर 'पशु' गाय को सूचित करता है। इसी तरह तमिल, मलयालम के 'माटु' शब्द केलिए अन्य भाषाओं में समानार्थ शब्द ढूँढ़ना मुश्किल है। अंग्रेज़ी का अंकिल (Uncle), कसिन (cousin) शब्द बहुत ही विशाल अर्थ रखते हैं। लेकिन भारतीय भाषाओं में हर प्रकार के अंकिल या कसिन केलिए अलग अलग शब्द होते हैं।

रूप के स्तर पर व्यतिरेक

रूपों के स्तर पर कई व्यतिरेक ऐसे हैं जिनके कारण अनुवादक के सामने समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हिन्दी में बैठ, बैठो, बैठिए का प्रयोग जहाँ होता है वहाँ अंग्रेज़ी में कठिनाई होती है। क्योंकि अंग्रेज़ी में 'तू', 'तुम' और 'आप' केलिए एक ही 'you' से काम लेना पड़ता है। इसी तरह क्रिया की रूप-रचना में मलयालम और अंग्रेज़ी के बीच काफ़ी व्यतिरेक पाए जाते हैं। मलयालम में क्रियारूपों में कालमात्रा का ध्यान होता है, लिंग, वचन, पुरुष का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं है। इसके विपरीत शब्दों में काल के साथ-साथ लिंग, वचन और पुरुष का भी ध्यान रखना पड़ता है। इससे जहाँ एक तरफ़ मलयालम भाषी लोग हिन्दी क्रिया रूप-रचना में गलती करते हैं, वहाँ दूसरी तरफ़ हिन्दी भाषी लोग मलयालम में अनुवाद करते हुए क्रियारूपों में लिंग, वचन और पुरुष को ढूँढ़ते-फिरते हैं।

अर्थ के स्तर पर व्यतिरेक

शब्दों के अर्थ के स्तर पर भी ऐसे ही कई व्यतिरेक मिलते हैं। उदाः हिन्दी में निश्चयवाचक सर्वनामों में लिंगभेद नहीं होता यह, वह, ये, वे आदि। मलयालम और अंग्रेज़ी में तो पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुसंक लिंग केलिए अलग-अलग रूप मिलते हैं। क्रमशः അവ ൻ, അവൾ, അൽ केलिए he, she, it शब्द। हिन्दी में नपुसंक लिंग नहीं है, पुल्लिग और स्त्रीलिंग ऐसे दो भेद हैं।

अंग्रेज़ी के good morning, good day, good afternooon, good evening और good night शब्दों केलिए हिन्दी में अलग-अलग रूप नहीं मिलते। आजकल कृत्रिम रूप से दो-तीन गढ़ लिए गए हैं, सुप्रभात, शुभरात्रि आदि। लेकिन ये प्रयोग सहज स्वाभाविक नहीं हैं। अंग्रेज़ी के uncle, aunt आदि शब्दों के बारे में शब्दों के स्तर पर 'व्यतिरेक' के संदर्भ में बताया जा चुका है। वे ही सारी बातें अर्थ के स्तर पर भी लागू होती हैं।

वाक्य के स्तर पर व्यतिरेक

वाक्य के स्तर पर पदक्रम, अन्वय, लिंग, वचन आदि व्यतिरेक होते हैं। पदक्रम, अन्वय आदि में हर

भाषा की अपनी प्रकृति होती है। अनुवादक इनसे अभिज्ञ रहे, यह आवश्यक है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा पर अनुवादक का अधिकार हो तो वाक्य स्तर पर के ये व्यतिरेक विशेष कठिनाई उपस्थित नहीं करते। लेकिन कुछ सह प्रयोग ऐसे हैं जिनका विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। उदाः मलयालम में കാറ്റ് കൊള്ളുക, അടി കൊള്ളുക, പറ്റിക്കപ്പെടുക आदि प्रयोग चलते हैं तो हिन्दी में 'हवा खाना', 'मार खाना', 'धोखा खाना' आदि प्रयोग चलते हैं। तमिल में तो इस स्थान पर 'लेना' का प्रयोग होता है, जैसे- കാറ്റ് വാങ്ങുക, അടി വാങ്ങുക इसी तरह अंग्रेज़ी में 'to take medicine' प्रयोग चलता है। इसके अनुकरण में हिन्दी में 'दवा लेना' प्रयोग चलता है जो सहज प्रयोग नहीं है। हिन्दी में तो 'दवा खाना' या 'दवा पीना' प्रयोग होना चाहिए। मलयालम के മരുന്ന് കഴിക്കുക, മരുന്ന് കുടിക്കുക का प्रयोग सहज हैं।

अंग्रेज़ी में 'the' or 'a' के प्रयोग में अंतर होता है। अनुवादक अक्सर अंग्रेज़ी के 'a' का अनुवाद एक करता है। हर हालत में 'a' का अनुवाद 'एक' करना सहज नहीं है। अनेक अवसरों पर अनुवादों में 'a', 'the' आदि छोड़ दिये जाते हैं।

उदाहरण देखिए-

Nehru was a good orator - नेहरूजी अच्छे वक्ता थे।

The snake was in the room- साँप कमरे में था।

A snake was in the room- कमरे में साँप था।

इस तरह हम देखते हैं कि अनुवाद के क्षेत्र में व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान का बड़ा महत्व है। भारतीय भाषाओं में व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ है। इस क्षेत्र में जितना भी काम हो वह अनुवादक केलिए वरदान सिद्ध होगा।

◆ असोसियेट प्रोफ़सर, हिन्दी विभाग
सरकारी आर्टस् आण्ड सयन्स कॉलेज,
कोषिक्कोड़, केरल।

सही उत्तर चुनें

1.कितने विश्व हिन्दी सम्मेलन चलाये गये?

(अ) 12 (आ) 11

(इ) 10 (ई) 9

2.प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन कहाँ चलाया गया?

(अ) भोपाल (आ) मोरीशस,

(इ) नागपुर (ई) सूरीनाम

3.भारतीय संस्कृति की संवाहिका भाषा कौन - सी है?

(अ) हिन्दी (आ) हिन्दुस्तानी

(इ) अंग्रेज़ी (ई) उर्दू

4. मोरीशस में कितनी बार विश्व हिन्दी सम्मेलन संपन्न हुए?

(अ) 2 (आ) 1

(इ) 4 (ई) 3

(शेष पृ.सं. 24)

हिन्दी का वैश्विक संदर्भ

♦ डॉ.एलिसबत जॉर्ज

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्क भाषा है। बहुभाषी भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता केवल हिन्दी भाषा में है। समकालीन परिदृश्य में दुनिया की सबसे लोकप्रिय भाषा हिन्दी है। विश्वभाषा के रूप में विश्व मानव को निकट लाने में हिन्दी की जो भूमिका है, महत्वपूर्ण है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर हिन्दी का महत्व बढ़ता जा रहा है।

भारत के बाहर नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश, मोरिशस, फिजी, त्रिनिड़ाड, कानड़ा जैसे देशों में रहनेवाले प्रवासी भारतीयों के लिए हिन्दी अपनी संस्कृति से जोड़नेवाली कड़ी है। मोरिश्स, सूरीनाम, फिजी जैसे देशों में हिन्दी का संपर्कभाषा के रूप में वहाँ के मूल निवासियों के बीच भी प्रचार-प्रचार है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, यूरोप, रूस जैसे देशों में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करनेवाले भारतीयों के बीच का विनिमय माध्यम हिन्दी है। उनके सहयोग में विदेशी भी हिन्दी से परिचित हो गए हैं। अंतर्राष्ट्रीय मंचों में भारतीय नेता हिन्दी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष करते हैं। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी जी, नरसिंह राऊ जी आदि ने संयुक्त राष्ट्र संघ में जो वक्तव्य हिन्दी में दिए थे, वे पूरे विश्व को ही प्रभावित किये थे।

भूमंडलीकरण के इस युग में भाषा का महत्व पहले से बहुत अधिक बढ़ गया है। 'विश्वगाँव' की परिकल्पना साकार हो गयी है और संप्रेषणीयता की दृष्टि से हिन्दी व्यापार- वाणिज्य के क्षेत्र में अधिक उपयोगी सिद्ध हो रही है। प्रबल राष्ट्र के रूप में भारत की प्रगति ने विश्व देशों का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य आदि के प्रति विश्व भर में रुचि बढ़ रही है। हिन्दी की विश्व व्यापकता में दृश्य माध्यमों की भूमिका कम नहीं है। विशेषकर हिन्दी फिल्मों द्वारा हिन्दी भाषा की लोकप्रियता बढ़ गई है।

विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों की संपर्क भाषा हिन्दी है। सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार पत्र-पत्रिकाओं, रेड़िया तथा टेलिविज़न द्वारा हो रहा है। प्रत्येक देश के भारतीय दूतावासों में हिन्दी अधिकारी नियुक्त हैं, जिनका कर्तव्य हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ाना है। भारतीय सांस्कृतिक परिषद् के हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका 'गगनांचल' इन दूतावासों में उपलब्ध होती है।

हिन्दी भाषा का अध्ययन-अध्यापन विदेशी विश्वविद्यालयों में नियमित रूप से हो रहा है। अमेरिका (कोलंबिया, शिकागो, टेक्सस, कालिफोर्निया) में कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी का शोध-कार्य चल रहा है। त्रिनिड़ाड में कुल जनसंख्या के आधे हिस्से के लोग भारतीय मूल के हैं। जापान के आठ विश्वविद्यालयों में हिन्दी स्नातकोत्तर स्तर तक पढ़ायी जाती है।

टोक्यो विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफसर डॉ. वायाओ दोई का परिश्रम हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सराहनीय है। प्रयाग विश्वविद्यालय से इन्होंने अपनी पी एच.डी उपाधि प्राप्त की थी। 'गोदान' तथा अन्य हिन्दी रचनाओं के अनुवाद जापानी भाषा में किये गये हैं। चीन के प्रो.ची.श्येन का नाम भी उल्लेखनीय है। पकिस्तान, बंगलादेश, बर्मा, नेपाल जैसे पड़ोसी देशों में हिन्दी का बराबर प्रचार-प्रसार हो रहा है। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन की व्यवस्था है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। जापान में रेडियो द्वारा हिन्दी समाचार और सांस्कृतिक कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित होते हैं। 'सर्वोदय', 'जापानी भारती' जैसी पत्रिकाएँ काफी समय से प्रकाशित हो रही हैं।

प्रवासी भारतीयों तथा विदेशी हिन्दी विद्वानों ने हिन्दी साहित्य-सृजन की दिशा में सफलता प्राप्त की है। फिजी के कमलाप्रसाद मिश्र, मोरीशस के अभिमन्यु अनत तथा प्रो.वासुदेव विष्णु दयाल, सूरीनाम के व्रजेन्द्र कुमार भगत और मुंशी रहमान खान आदि प्रवासी भारतीय साहित्यकार हैं।

चीन के प्रो. चिन्हिन होन के 'रामचरितमानस' का चीनी अनुवाद ख्याति प्राप्त रचना है। हिन्दी के मूल कृतिकारों में जूलियस फ्रेडरिक उलमन, स्मेकल आदि प्रमुख हैं। फिजी के सृजन हाउस ने फिजी-हिन्दी-अंग्रेज़ी कोष का निर्माण किया है। फिजी में हिन्दी संवैधानिक संसदीय मान्यता प्राप्त भाषा भी है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी आज मान्यता प्राप्त भाषा है। प्रवासियों के साथ विदेशियों ने भी हिन्दी को हृदय से लगा लिया है। पूर्व प्रधानमंत्री अटव बिहारी वाजपेयीजी की पंक्तियाँ यहाँ उद्धरणीय हैं-

"गूँजी हिन्दी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार।
राष्ट्रसंघ के संच में- हिन्दी का जयकार।"

संदर्भ

1. विश्व बाज़ार में हिन्दी- महिपाल सिंह, देवेन्द्र मिश्र
2. हिन्दी भाषा का समाज शास्त्र- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

◆ असिस्टन्ट प्रोफसर
सरकारी वनिता कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम।

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.22 के आगे)

5.अभिमन्यु अनत किस देश का लेखक था?

(अ) फिजी (आ) मोरीशस

(इ) सूरीनाम (ई) भारत

6.विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित करने का विचार सर्वप्रथम किस संस्था ने प्रस्तुत किया?

(अ) केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

(आ) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

(इ) हिन्दी संस्थान, उत्तरप्रदेश

(ई) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

7.'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन कब शुरू हुआ?

(अ) 1901 (आ) 1900

(इ) 1903 (ई) 1905

(शेष पृ.सं. 36)

विदेशों में हिंदी अध्ययन

♦ डॉ.सौम्या वी.एम

विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का लोप हो जाने के बावजूद भी भारतीय संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है। कई प्राचीन सभ्यतायें ज्ञान के क्षेत्र में भारत का ऋण मानती रही हैं। केवल प्राचीन समय में ही नहीं, बल्कि सदैव ही भारत ने ज्ञान का निर्यात दूसरी सभ्यताओं और संस्कृतियों को किया है। हमारी परंपरा विविधताओं का सम्मान करने की है और उनमें एकता स्थापित करने की है।

आज वैश्विक स्तर पर भारतीय परंपरा का अध्ययन एवं प्रचार-प्रसार हो रहे हैं। इस प्रचार-प्रसार में भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। अब विश्व में सर्वाधिक बोली जानेवाली तीसरी भाषा है हिंदी। विदेशों में हिंदी को अध्ययन-अध्यापन की आवश्यकता बढ़ रही है। हर पाँच में एक व्यक्ति हिंदी में इंटरनेट का प्रयोग करता है। फेसबुक, ट्विटर ,वाट्स एप आदि के लिए गूगल हिंदी इनपुट, लिपिक डॉट इन जैसे अनेक सॉफ्ट्वेयर और स्मार्टफोन एप्लीकेशन मौजूद हैं। हिंदी-अंग्रेज़ी मशीनी अनुवाद भी संभव है।

अब विदेशों में अनेक पत्र-पत्रिकायें हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं। बी.बी.सी, जर्मनी के 'डायचे वेले', जापान के 'एन एच के वर्ल्ड', यूएई के 'हम एफ-एम' आदि हिंदी की प्रचार-प्रसार में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विश्व के लगभग 100 देशों में या तो जीवन के विविध क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग होता है अथवा उन देशों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। इन देशा को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं-

1. एक तो वे देश जिनकी भारतीय मूल के अप्रवासी नागरिकों की आबादी अपने देश की जनसंख्या में लगभग 40 प्रतिशत या उससे अधिक है।
2. दूसरे वर्ग में वे देश आते हैं जो हिंदी को विश्व भाषा के रूप में सीखते हैं।
3. तीसरा वे देश जिनमें हिंदी-उर्दू मातृभाषियों की बड़ी संख्या निवास करती है।

अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है। ब्रिटेन की लंदन यूनिवर्सिटी, कैंब्रिज और यॉर्क यूनिवर्सिटि में हिंदी पढ़ाई जाती है। जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों ने हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। चीन में सन् 1942 में हिंदी अध्ययन शुरू हुआ। सन् 1957 में हिंदी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरंभ हुआ।

हिंदी साहित्य की ओर देखें तो तुलसीदास जी के 'रामचरितमानस', प्रेमचंद के 'गोदान' जैसे ग्रंथ ने भारत का नाम अमर कर दिया है। इन ग्रन्थों का अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है। इस प्रकार के ग्रंथों द्वारा हमारी संस्कृति एवं परंपरा विदेशों तक पहुँच गई है। हिंदी अब प्रयोजनमूलक स्तर पर भी अपनी चमक दिखा रही है। निश्चय ही भारतीय भाषा-परंपरा में हिंदी का अद्वितीय स्थान है। आज हिंदी भारत की शान बढ़ाते हुए विश्व के ऊपरी सिरे पर पहुँच गयी है।

जय हिंद जय हिंदी।

♦ हिंदी अध्यापिका,
चिन्मया विद्यालया

वैश्विक सन्दर्भ में हिंदी प्रचार में जुड़े प्रवासी साहित्यकारों की देन

♦ डॉ.लक्ष्मी.एस.एस

आजकल हिंदी विश्व भाषा के रूप में आगे बढ़ती जा रही है। इसमें साहित्य-सृजन की परम्परा भी बहुत अधिक है। इसकी शब्द संपदा विपुल है। हिंदी ने अन्यान्य भाषाओं के बहुप्रयुक्त शब्दों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है। आज हिंदी में मौलिक और अनूदित साहित्य उपलब्ध है जो विश्व स्तरीय है। हिंदी की और एक विशेषता यह है कि उसमें संस्कृत के उपसर्गों तथा प्रत्ययों के आधार पर शब्द बनाने की अभूतपूर्व क्षमता है। हिंदी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी सिनेमा की देन मुख्य है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। उसने सदा सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने हिंदी के महत्व के सन्दर्भ में इस प्रकार कहा था कि "भारत विभिन्न भाषाओं का देश है और हर भाषा का अपना महत्त्व है। परन्तु पूरे देश की एक भाषा होना अत्यन्त आवश्यक है, जो विश्व में भारत की पहचान बने । आज देश को एकता की डोर में बांधने का काम अगर कोई एक भाषा कर सकती है तो वो सवार्धिक बोली जाने वाली हिंदी भाषा ही है।" उन्होंने एक और ट्वीट पोस्ट में कहा "आज हिंदी दिवस के अवसर पर देश के सभी नागरिकों से अपील करता हूँ कि हम अपनी-अपनी मातृभाषा के प्रयोग को बढाएं और साथ में हिंदी भाषा का भी प्रयोग कर देश की एक भाषा के पूज्य बापू और लौह पुरुष सरदार पटेल के स्वप्न को साकार करने में योगदान दें।" सुश्री प्रजा गौड, राजभाषा भारती, पृ.101, वर्ष 40, अंक 155, अप्रैल-जून 2018)

हिंदी की वैश्विक स्थिति के संदर्भ में लिये गये साक्षात्कार में भारत सरकार के गृह मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह जी ने कहा- 'विश्व के विभिन्न देशों में रह रहे भारतीय मूल के करोड़ों लोग हिंदी का बखूबी प्रयोग कर रहे हैं । इसके कारण आज हिंदी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। विगत दशकों में हिंदी का अन्तराष्ट्रीय विकास बहुत तेज़ी से हुआ । विदेशों से बहुत सारी पत्र-पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं।' (राज भाषा, भाषा भारती, वर्ष 39, अंक 150, जन-मार्च 2017, पृ.3)।

हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ होकर विश्वव्यापी बन रही है। इंटरनेट के माध्यम से दूसरे देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं। साथ ही अमेरिका, इंग्लैंड, मॉरीशस, लंदन आदि देशों में हिंदी के रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा विश्व मन को जीत रहे हैं। इस अवसर पर प्रवासी साहित्यकारों का योगदान भी स्मरणीय है ।

हिंदी के प्रमुख प्रवासी साहित्यकारः

प्रवासी हिंदी साहित्य के अन्तर्गत अनेक प्रवासी साहित्यकार हैं जो अपनी लेखनी के माध्यम से यूरोपीय देशों में अपनी-अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त कर रहे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य पर गौर से दृष्टि डालें तो पाते हैं कि भारत के बााहर दुनिया के कई देशों में हिंदी साहित्य रचा जा रहा है। इसके अन्तर्गत मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, अमेरिका, कैनडा, नूज़ीलैंड, डेनमार्क, अर्जेण्टीना, नॉर्वे, जापान आदि आते हैं। विदेशों में रहकर साहित्य रचना करनेवाला लेखक आज इण्टरनेट के माध्यम से उस भाषिक साहित्य प्रेमियों से सहज गति से जुड़ गया है।

अमेरिका में रहकर हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में जुड़े रचयिताओं में सुधा ओम ढींगरा, सुषमा बेदी, प्रतिभा सक्सेना, पुष्पा सक्सेना, इला प्रसाद, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, नीलम जैन, रचना श्रीवास्तव आदि के नाम सहज लिये जा सकते हैं।

इंगलैंड में हिंदी साहित्य के विकास में डॉ.लक्ष्मीमल्ल सिंधवी का नाम सर्वोपरि है। इसके अतिरिक्त इंग्लैंड में प्रवासी साहित्य के विकास में श्रीमती शैल अग्रवाल, पदमेश गुप्त, कृष्णकुमार, तेजेन्द्र शर्मा, दिव्या माथूर आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं।

मॉरिशस में आज हिंदी लेखन अनवरत विकास की दिशा में अग्रसर है। प्रो.विष्णु दयाल, सोमदत्त बखोरी, ब्रजेन्द्र 'मधुकर', स्व.अभिमन्यु अनत, मुनीश्वर लाल चिंतामणि, प्रहलाद राम शरण, ईश्वर जागासिंह आदि वहाँ के कुछ प्रमुख हिंदी साहित्यकार हैं ।

नेपाल में हिंदी पहली, दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में व्यवहृत होती है। साहित्य-सृजन का कार्य भी

सफल रूप से होता है। मोतीराम भट्ट, लोकनाथ, देवकोटा, गोपाल सिंह नेपाली, केदारमान सिंह, कृष्णचन्द्र मिश्र काशी प्रसाद श्रीवास्तव आदि हिंदी और नेपाली के कवियों ने प्रचुर मात्रा में हिंदी में साहित्य-सृजन किया है।

कैनेडा के हिंदी साहित्यकारों में शैलशर्मा, श्रीनाथ द्विवेदी, रमेश गुप्ता, रीमा गुप्त, कृष्ण कुमार गुप्त, सुरेंद्र कुमार आदि का विशेष योगदान है ।

दिव्या माथुर - 23 मई सन् 1949 को दिल्ली में जन्मी प्रवासी लेखिका दिव्या माथुर ब्रिटेन में बसी भारतीय मूल की हिंदी लेखिका हैं। प्रवासी कथा साहित्य में दिव्या माथुर का अग्रणी स्थान है, आप एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उनकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह- आक्रोश (2004), पंगा (2008), आशा (2003), मेड इन इंडिया (2013)आदि।

कविता संग्रह- अंतः सलिला (1993), रेल का लिखा(1999), ख्याल तेरा (1998), चंदन पानी (2007), सितम्बर सपनों की राख (2003), झूठ, झूठऔर झूठ (2008)। उनके 'शाम भर बातें' नामक उपन्यास के केन्द्र में प्रवासी समाज है ।

सुषमा बेदी- सुषमा जी अमेरिका के प्रवासी हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण लेखिका हैं। उनका जन्म सन् 1945 को पंजाब में हुआ। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं- चिड़िया और चील (1995), यादगारी

कहानियाँ (2014), तीसरी आँख(2016), सड़क की लय (2017) आदि। उनके प्रमुख उपन्यास है- हवन (1989), नव भूम की रसकथा(2002), गाथा अमरबेल की (1999), मोर्चे (2006), मैंने नाता तोड़ा (2009), पानी केरा बुदबुदा(2017) आदि।

इनका कहानी संग्रह 'तीसरी आँख' भारतीय एवं पाश्चात्य जीवन के द्वन्द्व व भारतीय संस्कृति के जुड़ाव की अभिव्यक्ति करता है । उनका 'हवन' उपन्यास प्रवासी साहित्य की महत्वपूर्ण कृति है। यह उपन्यास अमेरिका के साथ अन्य देशों में बसे हुए प्रवासियों के जीवन की त्रासदी का सटीक वर्णन करता है।

सुधा ओम ढींगरा - हिंदी साहित्यकार, पत्रकार तथा संपादक डॉ.सुधा ओम ढींगरा का जन्म जालंधर, पंजाब, भारत में हुआ था। रंगमंच, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की कलाकार रही डॉ.ढींगरा आजकल, अमेरिका में रहकर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यरत हैं। उनकी रचनाएँ हैं - नक्काशीदार केबिनेट (उपन्यास); दस प्रतिनिधि कहानियाँ,कमरा नंबर 103, कौन सी ज़मीन अपनी, वसूली, सच कुछ और था आदि कथा संग्रह; सरकती परछाइयाँ,धूप से रूठी चाँदनी, तलाश पहचान की, सफर यादों का आदि काव्य संग्रह।

पुष्पिता अवस्थी- पुष्पिता अवस्थी एक प्रवासी प्रतिष्ठित साहित्यकार मानी जाती हैं। लेकिन वे भारतवासियों की व्यथा-कथा लिखनेवाली प्रवासी साहित्यकार है, जिन्होंने करीबियाई देशों में रह रहे भारतवंशियों को अपनी कथा का आधार बनाकर उनको नई संजीवनी देने का एक पुण्य कार्य किया है। उन्होंने साहित्य की विविध विधाओं में लेखन-कार्य किया है, जिसमें नीदरलैण्ड एवं सूरीनाम में बसे भारतवंशियों एवं प्रवासी भारतीयों के सामाजिक परिवेश एवं उसमें आते परिवर्तन का चित्रण मिलता है। उनके कहानी संग्रह 'जन्म' में आठ कहानियाँ संकलित हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं- मुट्ठीभर अकेलापन, देहिया, इनिका, उपस्थिति, विन्टरकोनिंग, अधर्म, रिया आदि।

तेजेन्द्र शर्मा - तेजेन्द्र शर्मा लगभग दो दशकों से लन्दन में प्रवास जीवन बितानेवाले साहित्यकार हैं। तेजेन्द्र शर्मा जी ने लंदन को अपना देश माना है, उसे अपनी जीवन शैली और आचरण में आत्मसात कर लिया है। वे स्वेच्छा से लंदन जाकर बसे और वहाँ की संस्कृति-सभ्यता को हृदय से अपनाया। तेजेन्द्र शर्मा के सात कहानी संग्रह प्रकाशित हैं- कला सागर (1990), ढ़िबरी टाईट (1994), देह की कीमत (1999), यह क्या हो गया (2003), बेघर आँखें (2007), सीधी रेखा की पर्ते (2009), कब्र का मुनाफा(2010) आदि।

सुदर्शन प्रियदर्शिनी- कथाकार सुदर्शन प्रियदर्शिनी का जन्म सन् 1942 में लाहौर में हुआ जबकि बचपन शिमला में बीता। आप अमेरिका में प्रवासी हैं और अपनी कहानियों, कविताओं और उपन्यासों के साथ विभिन्न साहित्यिक विधाओं से हिंदी साहित्य को अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही हैं।

प्रवासी हिंदी कथा साहित्य को सुदर्शन प्रियदर्शिनी ने परिपक्वता और निरंतरता प्रदान की है। उनके प्रमुख उपन्यास हैं- रेत के घर (भावना प्रकाशन), जालक (आधारशिला प्रकाशन), न भेज्यो विदेश (नमन प्रकाशन) आदि।

कहानी संग्रह - काँच के टुकड़े, उत्तरायण।

काव्य संग्रह- बराह, शिखण्डी युग, मुझे बुद्ध नहीं बनना

पंजाबी कविता संग्रह- मैं कोण हाँ

हाइकु - आठ हाइकु

छंद मुक्त -अंधेरे के नाम, आवाज़ दो, दीमक, दंभ, अहंकार, चाँद आदि।

अमेरिका और भारत के कई संकलनों में आपकी रचनाएँ संकलित हैं और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है। सुदर्शन प्रियदर्शिनी उन महान कथाकारों में से हैं जो अपने अनुभवों एवं संवेदनाओं को, कथा एवं पात्रों में विशेषकर अभिव्यक्त करती रहती हैं। उनकी रचनाओं में एक ओर अपने देश के प्रति प्यार है, तो दूसरी ओर स्वदेश-परदेश का द्वन्द्व भी है।

अभिमन्यु अनत - स्वर्गीस अभिमन्यु अनत मॉरीशस के हिंदी कथा-साहित्य के सम्राट हैं। उन्होंने अपने उच्च स्तरीय हिंदी उपन्यासों और कहानियों के द्वारा मॉरीशस को साहित्य मंच पर प्रतिष्ठित किया। उनकी कई रचनाएँ प्रकाशित हैं।

उषा राजे सक्सेना - उषा राजे सक्सेना प्रवासी साहित्य की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं । उन्होंने लम्बे समय तक लंदन में हिंदी साहित्य की कई विधाओं में सृजनात्मक योगदान दिया। उनके कथा संग्रह 'विश्वास की रजत सीपियाँ' (1996) और 'इन्द्रधनुष की तलाश में' (1997) प्रकाशित हुए। उनके कहानी-संग्रह हैं- 'प्रवास में '(2002), 'वाकिंग पार्टनर' (2004) आदि। आपने हिंदी की महत्वपूर्ण साहित्यक त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' का संपादन-कार्य भी किया है। प्रवास में हिंदी साहित्य की सेवा और प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें विभिन्न संस्थाओं ने सम्मानित किया।

रेखा मैत्र- प्रवासी काव्य साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं रेखा मैत्र । उनके दस कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनका चर्चित काव्य संकलन है - 'बेशर्म के फूल'। रेखाजी ने अपनी कविताओं में भारतीयता की वाणी दी है।

सुनिता जैन- अमरिका में बसनेवाली लेखिकाओं में सुनिता जैन का नाम उल्लेखनीय है। उनकी रचनाएँ हैं- बोज्यू, सफर के साथी, बिन्दु, मरणातीत, गूँज-अनुगूँज आदि।

इस प्रकार प्रवासी साहित्यकार हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में बहुत कुछ कार्य कर रहे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी भारतीयों की भावुकता प्रकट है, साथ ही अपनी भाषा के प्रति प्रेम भी व्यक्त है। ये सब हिंदी भाषा के विकास में वृद्धि दे रहे हैं, साथ ही साथ विश्व भाषा के रूप में हिंदी की व्यापकता का परिचय भी दे रहे हैं।

आजकल साहित्यिक आलोचना में 'विमर्श' शब्द का प्रचुरता से प्रयोग होता है, जैसे- स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, आदिवासी विमर्श, प्रवासी विमर्श आदि। प्रवासी विमर्श में प्रवासियों का विमर्श होता है।

◆ असिस्टन्ट प्रोफसर
हिन्दी विभाग,
एन.एस.एस कॉलेज, पंतलम्।

हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य

♦ डॉ.प्रिया.ए

भाषा का संबन्ध मनुष्य के जीवन से अत्यंत निकट का होता है। भाषा के स्वरूप का निर्धारण मानव समाज द्वारा ही संभव है। भाषा मानव के मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक परिवर्तन के साथ-साथ अपना स्वरूप भी बदलती है। हिन्दी भाषा भारत की आत्मा है, जो करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाती है। वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा की अपनी विराटता सिद्ध हुई है। विश्व में ज़्यादातर बोली जानेवाली भाषा के रूप में हिन्दी ने अपनी पहचान बनाई है।

हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीयता को प्रमाणित करने के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। विश्व पटल पर सैकड़ों देशों में भारतीय प्रवासी निवास करते हैं। जहाँ भी भारतीय प्रवासी हैं, वहाँ हिन्दी का प्रयोग किसी न किसी रूप में किया जाता है। अतः विश्व में जहाँ भी भारतीय मूल के निवासी हैं, वहाँ हिन्दी भाषा संपर्क भाषा और संस्कार की भाषा की हैसियत से विद्यमान है।

उत्तराधुनिक समय में हिन्दी विश्व में खासकर मनोरंजन की दुनिया में सबसे आगे है। यही कारण है कि सोनी, Z टी.वी, डिस्कवरी चैनल तथा विदेशी कार्टून चैनल आदि में कार्यक्रम भारत एवं पड़ोसी देशों में अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिन्दी भाषा में भी प्रसारित होने लगे हैं। हिन्दी भाषा को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह चैनलों, विज्ञापन एजन्सियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशिष्ट योगदान है।

हिन्दी जनसंचार माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है। उसके बहुविध स्वरूप और प्रयोजनमूलक रूप उजागर हुए हैं। रेड़ियो, टी.वी, कंप्यूटर, इंटरनेट एवं पत्रकारिता की अत्याधुनिक तकनीकों से आज की हिन्दी जुड़ी हुई है। भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा का एक अलग महत्वपूर्ण स्थान है। जनभाषा के रूप में हिन्दी का सर्वोपरि महत्व है। यह साक्षर वर्ग की ही नहीं, निरक्षर वर्ग की भी संपर्क भाषा है। हिन्दी फिल्मों और बोलिवुड का भूमंडलीकरण हो रहा है, उससे बोलचाल की हिन्दी का प्रसार देश-देशान्तरों में हो रहा है। वैश्वीकरण ने हिन्दी भाषा को प्रभावित किया है और हिन्दी ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को भी लोकप्रिय बना दिया है। भारत एवं विदेश के कई विश्वविद्यालयों में, संस्थाओं में हिन्दी भाषा में अध्ययन हो रहा है। हिन्दी भाषा और साहित्य पर एम.पिल, पी एच.डी तथा डी.लिट के शोधकार्य होते हैं। हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाओं का विदेशी भाषाओं में अनुवाद तथा विदेशी साहित्य रचनाएँ हिन्दी में अनूदित होकर उस हिन्दी अनुवाद के सहारे अन्य भारतीस भाषाओं में अनूदित होती हैं।

संचार और मीड़िया के क्षेत्र में हिन्दी भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मोबाइल फोन के ज़रिए भी आजकल SMS या MMS भेज सकते हैं। Social मीडिया के क्षेत्र में भी हिन्दी भाषा ने अपनी पहचान बनाई है। इंटरनेट क्रांति के दौर में Facebook, Twitter, Whatsapp जैसे अनेक प्लाटफोर्म हैं, जिनसे पूरे विश्व को एक सूत्र में बाँधने का कार्य होता है। इन सभी जगहों में हिन्दी भाषा का भी महत्व होता है।

भारतीय प्रवासी लेखकों द्वारा साहित्य रचना के ज़रिए विदेशों में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार हो रहा है। वे अपनी संवेदनाओं को हिन्दी भाषा में दर्ज करते

हैं। विविध साहित्य विधाओं में उनकी कई किताबें हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो रही हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलनों द्वारा भी हिन्दी भाषा को प्रगति एवं प्रचार मिल रहा है। कुल ग्यारह विश्व हिन्दी सम्मेलन चलाये गये हैं। विश्व हिन्दी सम्मेलनों में हिन्दी भाषा तथा भारतीस संस्कृति विषयक चर्चाएँ बखूबी से संपन्न होती हैं। हिन्दी का अतीत काफी संघर्षमय रहा है, वर्तमान मज़बूत है और भविष्य उत्साहवर्द्धक तथा उज्ज्वल रहेगा।

संदर्भ

1. डॉ. रामविलास शर्मा - भारत की भाषा समस्या
2. डॉ. दिलीप सिंह - अनुवाद का सामाजिक परिप्रेक्ष्य
3. हीरालाल बचौतिया - राजभाषा हिन्दी और उसका विकास
4. सुषम बेदी - हिन्दी भाषा का भूमण्डलीकरण : अस्मिता का सवाल और डायस्पोरा का लेखक
5. महिपाल सिंह एण्ड देवेन्द्र मिश्र - विश्व बाज़ार में हिन्दी

♦ असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम जिला,
केरल - 686502

श्रद्धांजलि
विष्णु नारायणन नंपूतिरि

मलयालम के विख्यात कवि प्रो.विष्णुनारायणन नंपूतिरि 25 फरवरी 2021 को श्रीवल्ली घर, तैक्काटु, तिरुवनन्तपुरम में स्वर्गस्थ हुए। उनका जन्म 2 जून 1939 को तिरुवल्ला के मेप्पाल श्रीवल्ली इल्लं में हुआ। पिता का नाम था विष्णु नंपूतिरि और माता का नाम था अदिति।

आप सरकारी कॉलेजों में अंग्रेज़ी के प्राध्यापक थे। यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम में अंग्रेज़ी विभाग का अध्यक्ष पद अलंकृत करते वक्त सेवानिवृत्त हुए। पत्नी है श्रीमती सावित्री। दो संतानों में बड़ी डॉ. अदिती नंपूतिरि एम.जी.कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम के मनेविज्ञान विभाग में प्रोफेसर रहीं। छोटी बेटी अपर्णा नंपूतिरि केन्द्रीय विद्यालय, तृशूर में अध्यापिका है। दामाद हैं, क्रमशः राधाकृष्णन नंपूतिरी (सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक, एस.बी.टी) और श्रीकुमार (प्रोड्यूसर, दूरदर्शन, तृशूर)।

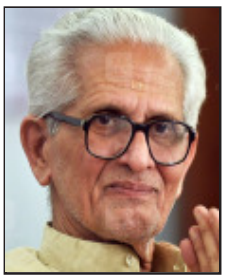

आपकी स्कूली शिक्षा तिरुवल्ला के कोच्चु पेरिङ्ङरा स्कूल में संपन्न हुई। कॉलेज शिक्षा सेंट बेकमान्स कॉलेज (चेङ्ङनाशेरी) तथा सेंट जोसेफ्स कॉलेज (देवगिरि) में संपन्न हुई। मलबार क्रिस्टियन क़लेज तथा एस.एन.कॉलेज (कोल्लम) इन गैर सरकारी कॉलेजों में अध्यापनवृत्ति करने के बाद सरकारी कॉलेज में अंग्रेज़ी अध्यापक नियुक्त हुए।

साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं में आपका योगदान महत्वपूर्ण रहा। केरल साहित्य अकादमी, प्रकृति संरक्षण समिति, केरल कला मंडल जैसी संस्थाओं में आपकी सेवा सराहनीय रही। 'केरल स्टेट भाषा इंस्टिट्यूट' में रिसर्च ऑफिसर तथा 'ग्रंथालोकम्' पत्रिका के संपादक भी रहे। आपने कवयित्री श्रीमती सुगतकुमारी तथा श्री.एन.वी.कृष्णवारियर के साथ साइलन्टवाली आंदोलन सक्रिय में भागीदारी की थी। आठ बार हिमालय में पत्नी के साथ तीर्थाटन किया।

कवि के रूप में ज़्यादा विख्यात हुए प्रो. विष्णुनारायण नंपूतिरिजी का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी है। 'प्रणय गीतङ्ङल' (प्रणय गीत), 'इन्त्ययेन्न विकारं' (भारत मेरी संवेदना), 'स्वातंत्र्यत्तेक्कुरिच्चु ओरु गीतं' (स्वतंत्रता पर एक गीत), 'अतिर्त्तियिलेक्कु ओरु यात्रा' (सीमा की ओर यात्रा), 'अरण्यकं' (अरण्यक), 'उज्जयिनियिले राप्पकलुकल' (उज्जयिनी के रात - दिन), 'मुखमेविटे?' (चेहरा कहाँ है), 'भूमि गीतङ्ङल' (भूमि गीत) आदि उनके कविता संकलन हैं। असाहितीयं', 'अलकटलुं नेय्याम्पलुकलुं कवितयुरे डी एन ए, आदि निबंध संग्रह हैं। 'गाँधी', 'सस्यलोकं', (वनस्पति लोक), 'ऋतुसंहारं', आदि अनूदित ग्रंथ हैं। 'कुट्टिकलुटे शेक्स्पियर' बालसाहित्य ग्रंथ है। पुतुमुद्रकल (नयी मुद्राएँ), वनपर्वं (वनपर्व), स्वतंत्र समर गीतङ्ङल (स्वातंत्र्य समर गीत), 'देशभक्ति कवितकल' (देश भक्ति कविताएँ) आदि संपादित ग्रंथ हैं। आपकी संपूर्ण कृतियाँ 'वैष्णवं' नाम से प्रकाशित है।

विष्णुनारायणन नंपूतिरिजी के पहले कविता संकलन 'स्वातंत्र्यत्तेक्कुरिच्चु ओरु गीतं' की भूमिका में उनके दोस्त श्री एन.वी.कृष्ण वारियर ने लिखा है - "विष्णु की कविता रूपी लता की जड़ संस्कृत-मलयालम कविताओं की उर्वर मिट्टी में जमी है तो वह पाश्चात्य कविता के वातावरण से वायु और ऊर्जा लेकर अंकुरित, पुष्पित और फलित होती है। मलयालम कविता में नूतन किरणें प्रस्फुटित होते वक्त भी विष्णु परंपरा की ऊर्जा नहीं छोड़ता।" एक बार विष्णुजी ने कहा - "संस्कार मानव मन में होनेवाला नवीकरण है। परिष्कार भौतिक तल में होनेवाला उत्थान भी विष्णुजी आधुनिक थे, किन्तु परिष्कृत होना नहीं चाहते थे। परंपरा को छोड़े बिना आधुनिकता को भी स्वीकार करके उन्होंने काव्य पूजा की थी। उनकी अधिकांश कविताएँ छंदबद्ध हैं।

परिस्थिति संबन्धी उनका दृष्टिकोण भारतीय था। मनुष्य जैसे ही धरती की समस्त प्राणियों को वे महत्वपूर्ण मानते थे। इस संदर्भ में उनकी 'काटिन्टे विली' (जंगल की पुकार), 'कालिफोरणियायिले मरमुत्तच्चन' (कालिफार्निया का दादा पेड़) जैसी कविताएँ ध्यान देने योग्य हैं।

विष्णुजी एक कवि में कविता, ज़िन्दगी जैसी से अवस्थाएँ नहीं मानते थे। उनका विश्वास का कि कवि की ज़िन्दगी कविता का व्याख्यान है।

कवि विष्णुजी की ज़िन्दगी लालित्यपूर्ण रही। उन्हें साइकिल यात्रा अधिक प्रिय थी। सरकारी कॉलेज में अध्यापनवृत्ति के समय जहाँ-जहाँ तबादला पाकर जाते थे वहाँ अपने परिवार के साथ साइकिल भी ले जाते थे। उन्हें झूठी प्रशंसा पसंद नहीं थी। वे सभी कार्यों में निष्ठा भी रखते थे।

सेवानिवृत्त होने के बाद कुछ दिनों तिरुवल्ला के 'श्रीवल्लभ मंदिर में मुख्य पुजारी बने। उनके पुजारी बनने का समाचार 'मलयाल मनोरमा' दैनिक के मुखपृष्ठ में 'काव्यलोक संचारी विष्णुपाद पुजारी' शीर्षक के साथ छपा था। इस मंदिर में पुजारी का काम सरल नहीं था। ब्रह्म मुहुर्त्त में उठना था। ग्यारह घंटे एकाग्रता से सेवा करनी थी। पंचरात्र पूजा को छाती तक ऊँचे मंड़प में कई बार चढ़ना पड़ता था। तीनों श्रीबलियों के समय तिहत्तर दिकों में बिखराकर परिक्रमा करनी थी। विष्णुजी के इसी मंदिर में पुजारी बनने का विशेष कारण यह था कि उनकी माता की पहली पाँच प्रसूतियों के शिशु मर गये थे। प्रसव के समय शिशु या तो मृत

(शेष पृ.सं. 39)

वैश्विक हिन्दी लेखक 'अज्ञेय' : 'नदी के द्वीप' के विशेष संदर्भ में

♦ डॉ.धन्या.एल

हिन्दी की सेवा किये और हिन्दी साहित्य में जीवन बिताए सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के नाम को बड़े ही आदर और सम्मान से लिया जाता है, जिन्होंने न सिर्फ अपनी लेखनी से हिन्दी का सम्मान बढ़ाया है बल्कि अपनी कलम से निकली चेतनाओं के अंदर नए प्राण फूंके हैं। 'अज्ञेय' स्वयं की वैश्विक स्वीकृति की ध्वनि थे।

अज्ञेयजी भाषा के पूरे पंडित थे। उनके उपन्यासों में से भाषा सबंधी कुशलता हमें जान पड़ते हैं। उन्होंने अपने भाषा संबंधी विचार प्रकट करते हुए कहा है कि "मैं हिन्दी भाषा लिखता हूँ। बहुत से लोग ऐसा मानते हैं कि मेरी मातृभाषा हिन्दी नहीं है। मैं ने सबसे पहली भाषा हिन्दी ही सीखी। अपनी विशेष परिस्थितियों के कारण मैं ने हिन्दी को कुछ अधिक उत्तरदायी ढंग से ग्रहण किया- आप चाहें तो यों कह लीजिये कि वैसा मुझे करना पड़ा। मातृभाषा मानकर उनकी जितनी अवज्ञा की जा सकती थी, वह मैं ने नहीं की। भाषा मानकर उसे पढ़कर, समझकर, सही संस्कारी ढंग से उसका संयत और नियंत्रित उपयोग करके जो किया जा सकता है, भरसक वही मैं करता रहा।"[1]

भाषा की समृद्धता के विषय में अज्ञेयजी लिखते हैं, "भाषा का उपयोग जितना ही व्यापक और गहरा होता है, उतना ही भाषा समृद्धतर होती है और अपने व्यवहर्ता को समृद्धतर बनाती है और भाषा का ऐसा प्रयोग कामचलाऊ, आनुषंगिक, आपद्धर्मी प्रयोग नहीं है; —भाषा का व्यवहार समृद्धि देनेवाला तभी होता है, जब उसके साथ लगाव (कामिटमेंट) उसी भाषा के माध्यम से अनुभव के प्रति लगाव होता है। ऐसी ही भाषा, ऐसी ही प्रयुक्त भाषा–अनुभव की भाषा– संस्कृति का और अस्मिता का उपकरण होती है।"[2]

हिन्दी भाषा संबंधी अज्ञेयजी का दृष्टिकोण इस प्रकार है - "मेरी हिन्दी राष्ट्रभाषा हो या न हो, राष्ट्र के जीवन में संयोगकारक कड़ी का पद उसे कानून दिया जाये या न दिया जाये, वह सबसे पहले और अनिवार्यतया एक विकासमान भाषा है।"[3]

अज्ञेय के पहला उपन्यास 'शेखरः एक जीवनी' में अपने भाषा संबंधी विचारों को 'शेखर' नामक पात्र के माध्यम से अज्ञेय ने अत्यंत गौरव के साथ व्यक्त किया है कि "हिन्दी जनभाषा है। करोड़ों व्यक्तियों के प्राण इसमें बोलते हैं और हमारी जाति की परंपरा इसमें बोलती है - हमारा सारा अतीत इसमें बंधा हुआ है। मुझे तो भविष्य दीखता ही हिन्दी में है -अगर हिन्दी हम सबसे छूट गई तो भविष्य हुआ, न हुआ, बराबर है।"[4]

एक स्थान पर भाषा अस्मिता पर विचार करते हुए अज्ञेय लिखते हैं- "अगर यथार्थ को पहचाननेवाला मैं हूँ और उस मैं की पहचान भाषा के साथ बंधी हुई है, तो स्वाभाविक है कि यथार्थ की पहचान भी भाषा के साथ बंधी हुई हो।"[5]

अज्ञेयजी हिन्दी को निरंतर विकासमान भाषा मानते हैं। वैसे तो सभी भाषाएं जिसमें ज़रा भी दम है, विकासमान हैं। वे हिन्दी को जनभाषा भी कहते हैं; क्योंकि करोड़ों व्यक्तियों के प्राण इसी में बोलते हैं। यदि ईमान दारी से देखा जाय तो उनके ये विचार बहुत ही सही लगते हैं। आज मात्र हिन्दी ही भारत में एक ऐसी भाषा है, जो हर भाषा-भाषी के गले आसानी से उतर जाती है। इसे देखते हुए उसकी सहजता को तो एकदम नकारा नहीं जा सकता। हिन्दी ही राष्ट्रभाषा-पद की अधिकारिणी हो सकती है। जन-जन की सांसों में सम्मान की क्षमता इसी हिन्दी भाषा में है।

अज्ञेयजी का जीवन विचित्र संयोगों का संगम रहा है। एक ओर साहित्य के प्रति अटूट रुचि, दूसरी ओर बमबाजी और विषैले रसायनों का अध्ययन यानि क्रांतिकारिता, मायावादी प्रकृति, जेल-जीवन, नज़रबंदी आदि के विलक्षण संयोग ने उनको साधारण नहीं रहने दिया। वे असाधारण व्यक्तित्व के व्यक्ति ही गए और इसी असाधारणता ने उन्हें एक प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित कथाकार बना दिया। अज्ञेयजी के व्यक्तित्व की गहरी छाप उनके साहित्य में उपलब्ध है। वे जिन आदर्शों एवं मानकों को आधुनिक जीवनबोध के अनुकूल तथा व्यावहारिक जीवन में उपादेय समझते हैं, उन्हीं का निरूपण अपनी रचनाओं में करते हैं।

अपने रचना कर्म से हिन्दी जगत को प्रभावित रखनेवाले सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' समर्थ एवं विराट व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। अज्ञेयजी के पास पश्चिमी साहित्य से लेकर प्राचीन साहित्य के अध्ययन-अवलोकन का विस्तृत भंडार था। जितना विराट और विविधता से परिपूर्ण उनका व्यक्तित्व रहा उतना ही व्यापक उनका सृजन-क्षेत्र भी था। जिसभी विधा को उन्होंने स्पर्श किया, मानो वह उनकी हो गई। बीसवीं शताब्दी के हिन्दी साहित्यकारों में अज्ञेय ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने सबसे अधिक विधाओं में उत्कृष्ट साहित्य लिखा है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रावृत्तान्त, जीवनी, डायरी लेखन, निबंध आदि समस्त विधाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाया है, साथ ही उसकी श्री में चार चांद भी लगाये हैं। अज्ञेय की रचना दृष्टि वैश्विक थी। वे काव्यानुभूमि और कथानुभूमि को अलग-अलग रूप, पहलू या प्रवाह अथवा स्तर न मानकर बिलकुल एक मानते हैं। नई कविता एवं प्रयोगवाद के जनक के रूप में अज्ञेय के अहं की चर्चा बहुत हुई। अज्ञेयजी ने 'दूसरा सप्तक' की भूमिका में लिखा है- "मनुष्य के मूल रागात्मक सबंध नहीं बदलते, वे तो प्रारम्भ से ही ज्यों के त्यों बने हैं, परंतु प्रणालियाँ बदलती रहती हैं। प्रतीक बदल जाते हैं।"6

अज्ञेयजी ने हिन्दी उपन्यास जगत में सन् 1940 में पदार्पण किया। एक कुशल उपन्यासकार के रूप में अज्ञेय ने केवल तीन उपन्यास- शेखरः एक जीवनी (1941), नदी के द्वीप (1951), अपनेअपने अजनबी (1961)- देकर ही हिन्दी की उपन्यास विधा को सशक्त भी किया और हिन्दी उपन्यास लेखन के क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत भी कर दी। उन्होंने अपने उपन्यासों द्वारा हिंसा-अहिंसा, प्रेम-वासना, विवाह, दाम्पत्य जीवन, धर्म, ईश्वर आदि के विषय में भी नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किये हैं।

अपनी अनवरत साहित्य साधना केलिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार और ज्ञानपीठ सम्मान से सम्मानित किए गए। मनोवैज्ञानिक कथाकार मन की

आभ्यंतरिक उथल-पुथल को अपनी कथा का आधार मानता है। अज्ञेय मानव मन के आभ्यंतर के कथाशिल्पी हैं। अज्ञेय के उपन्यास वस्तुनिष्ठ न होकर व्यक्तिनिष्ठ हैं। उनकी रचनाओं में व्यक्ति-चरित्र की गहराई है। इसी गहराई के कारण उनकी रचननाओं में दर्शन और मनोविज्ञान के सूक्ष्म अंश प्रत्यक्ष हो जाते हैं। अज्ञेयजी एक ऐसे शिल्पी हैं, जिनमें मानव मन की अतल गहराइयों में पैठने की अपार क्षमता है। मानव मन की गहराई में पैठकर वे जिन निष्कर्षों पर पहुँचे है, वे सभी हमारे समक्ष हैं। अज्ञेय के उपन्यास व्यक्ति के स्वतंत्र की खोज करते हैं। व्यक्ति जीवन की अंतश्चेतना का उदघाटन और निरूपण करना उनका लक्ष्य है। सदैव उनकी दृष्टि व्यक्तिकेन्द्रित है। आत्मनिष्ठ या व्यक्ति केन्द्रित होने के कारण उनके उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक पक्ष प्रबल हो जाता है। अज्ञेय के उपन्यास वस्तुनिष्ठ न होकर व्यक्तिनिष्ठ हैं।

'नदी के द्वीप'(1951) अज्ञेयजी का दूसरा उपन्यास है, जिसमें उन्होंने अति आधुनिक एवं प्रतिकात्मक शैली या नवीन शैलियों का प्रयोग किया है। 'नदी के द्वीप' में उपसंहार सहित कुल ग्यारह छोटे-छोटे खंड हैं।

'नदी के द्वीप' एक दर्दभरी प्रेम-कहानी है। इस दर्द-भरी प्रेम की कथा से इस उपन्यास को गति एवं जीवंतता उपलब्ध हुई है। प्रस्तुत उपन्यास खोखले सबंधों से संबन्धित है। इसमें एक संवेदनशील युवक के प्रणय जीवन का चित्रण है। तीन सौ छत्तीस पृष्ठोंवाले इस उपन्यास में कथा केवल इतनी से है- भुवन और चंद्रमाधव दोनों का आकर्षण रेखा की ओर है। दोनों में रेखा की प्रणय-प्राप्ति केलिए एक द्वंद्व-सा चल रहा है। रेखा भुवन की ओर आकृष्ट होती है। भुवन आगे चलकर गौरा के प्रति समर्पित होता है।

अज्ञेय के शब्दों में, "'नदी के द्वीप' व्यक्ति चरित्र का उपन्यास है। घटना-प्रधान उपन्यास यह नहीं। शेखर के समान वह परिस्तिथियों में विकसित होते हुए व्यक्ति का चित्र है और उस चित्र के निमित्त उन परिस्तिथियों की आलोचना भी है। वह व्यक्ति चरित्र का, चरित्र के उद्घाटन का उपन्यास है।"[7]

इस उपन्यास में व्यक्ति नदी के द्वीप की तरह है। चारों तरफ नदी की धारा से घिरा, लेकिन फिर भी अकेला और अपनी सत्ता में स्वतंत्र। प्रस्तुत उपन्यास में भुवन, रेखा, गौरा और चंद्र माधव ये चारों प्रमुख पात्र हैं। उपन्यास की मुख्य पात्र रेखा और भुवन एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट हैं। दोनों के बीच शारीरिक संबंध भी है, लेकिन फिर भी रेखा भुवन को छोड़कर डॉ.रमेशचन्द्र से विवाह करती है। गौरा और भुवन के बीच भी एक-दूसरे केलिए आकर्षण है, लेकिन वे उसे सही रूप में व्यक्त नहीं कर पाते। उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र रेखा है, जो क्षण की वास्तविकता में विश्वास रखती है। रेखा का व्यक्तित्व भुवन से कहीं अधिक गरिमामय दिखाई देता है। वह उच्च मध्यवर्गीय स्त्री पात्र है। उसमें ईर्ष्या का भाव रंचमात्र भी नहीं है। भुवन में गौरा के आने से उसमें सत्य भाव की ही अधिकता दिखायी देती है। गौरा एक विदुषी महिला है। वह मानव नियति में विश्वास करती है। गौरा धीर, गंभीर, संयमी, चरित्रवान भारतीय संस्कृति की पोषक है। चंद्र माधव खलपात्र के रूप में चित्रित है। वह कामुक, चरित्रहीन, असभ्य एवं धोखबाज दिखायी देता है। अन्य पात्र गौण रूप में इस उपन्यास में आये हैं।

अज्ञेयजी की कथा कहने का ढंग सरल एवं

रोचक है। 'नदी के द्वीप' कथा निश्चित रूप से मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी है। इस प्रकार कह सकते हैं कि प्रेमचंद ने हिन्दी कथासाहित्य को शारीरिक ढाँचा दिया और अज्ञेय ने उसमें स्वस्थ आत्मा का प्रतिष्ठापन किया। पात्रों की मनोरचना के वैज्ञानिक अंकन और विश्लेषण की दृष्टि से यह एक श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। 'नदी के द्वीप' में अंकित प्रेम में आत्मसमर्पण, आत्मदान एवं त्याग के प्राधान्य को ही देखा जा सकता है।

हिन्दी साहित्य में हर विधा पर अज्ञेय ने अपना पूरा अधिकार सिद्ध किया। उन्होंने हिन्दी भाषा एवं साहित्य को जो कुछ दिया है, उससे उनकी बहुमुखी प्रतिभा तथा नवीन बौद्धिक क्षमताओं का संकेत प्राप्त होता है। अज्ञेयजी के योगदान से हिन्दी भाषा एवं साहित्य दीप सदा जगमगाता रहेगा।

हिन्दी में प्रयोगवादी कविता के प्रवर्तक अज्ञेयजी मनोवैज्ञानिक कथाकार भी हैं और उनकी कथा रचनाएँ विशिष्ट प्रकार की हैं।

संदर्भ-

1अज्ञेय का कथा साहित्य, डॉ.देवकृष्ण मौर्य, अतुल प्रकाशन, कानपुर 208012, प्रकाशन वर्ष-1994, पृ.सं. 304

2 वही, पृ.सं. 304

3 वही, पृ.सं. 305

4 वही, पृ.सं. 305

5 वही, पृ.सं. 305

6 सन्नाटे का द्वंद्व अज्ञेय, from hindi.webdunia.com

7 हिंदी उपन्यासों में व्यक्तिवादी चेतना, डॉ.एन.के.जोसेफ, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रकाशन वर्ष-1989, पृ.सं. 88

सहायक ग्रन्थ-

1 अज्ञेय का कथा साहित्य, डॉ.देवकृष्ण मौर्य, अतुल प्रकाशन, कानपुर-208012, प्रकाशन वर्ष-1994

2 hindi.webdunia.com

3 हिंदी उपन्यासों में व्यक्तिवादी चेतना, डॉ.एन.के.जोसेफ, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रकाशन वर्ष-1989

4 अज्ञेय की कहानियाँ, डॉ.नंदकुमार राय, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली-11002, प्रकाशन वर्ष-1997

◆ विभागाध्यक्षा एवं असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, के एस एम डी बी कॉलेज

शास्तांकोट्टा, कोल्लम जिला,

केरल राज्य।

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.24 के आगे)

8.'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' की स्थापना कब हुई?

(अ) 1960 (आ) 1955

(इ) 1961 (ई) 1950

9.'भाषा' पत्रिका किस संस्था से प्रकाशित होती है?

(अ) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

(आ) भारतीय भाषा परिषद,

(इ) केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो

(ई) केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

10. हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक इतिहास ग्रंथ का प्रणेता कौन है?

(अ) रामकुमार वर्मा (आ) रामचन्द्र शुक्ल

(इ) हज़ारीप्रसाद द्विवेदी (ई) नंददुलारे बाजपेयी

(शेष पृ.सं. 50)

कनाडा में हिन्दी की दशा और दिशा

♦ डॉ.रंजीत रविशैलम

अनेक देशों की तरह कनाड़ा में भी भारतीय आप्रवासी के रूप में जाकर बसने लगे। शुरू शुरू में पंजाबियों की संख्या बहुत अधिक थी। वे लोग कनाडा के बड़े शहरों जैसे टोरोंटो, मोंट्रियल और वाकूबर में रहने लगे। उनमें आपस में मेल-मिलाप शुरू हुआ। तदनंतर वहाँ मंदरों का निर्माण होने लगा। धीरे-धीरे समारोह वगैरह आयोजित होने लगे। इन समारोहों में मुख्य रूप से हिन्दी भाषा का प्रयोग वे लोग करते थे। इस तरह वहाँ हिन्दी का आगमन ज़ोर-शोर से होने लगा।

सन् 1970 ई. की शुरुआत में कुछ हिन्दी केंद्र वहाँ खोले गए। मुकुल विद्यालय सन् 1970 में खोला गया। आज देश के विभिन्न भागों में मुकुल हिन्दी स्कूल की कक्षाएं चलायी जा रही हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संलग्न अनेक संस्थाएं आज स्थापित हैं। ब्रिटिश कोलम्बिया के बरनबी की विश्व हिन्दू परिषद ने सन् 1975 में हिन्दी की कक्षाएँ आरंभ की थीं। कालगरि की वैदिक हिन्दू सभा ने सन् 1980 में, कालगरी रामायण भजन मंडली ने सन् 1982 में तथा बंकूवर के महालक्ष्मी मंदिर की वैदिक सांस्कृतिक सभा ने सन् 2004 में हिन्दी कक्षाएं प्रारम्भ कीं।

एडमंडन की 'अल्बठी हिन्दी परिषद' कनाडा में एकमात्र संस्थान है जिसके पास अपना भवन है। यहाँ सन् 1985 से हिन्दी कक्षाएँ चलायी जा रही हैं। 'हिन्दू इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग' की स्थापना सरी जगदीश शास्त्री ने की थी। वहाँ पर एक और इंस्टीट्यूट कार्यरत है, उसका नाम 'हिन्दू इंस्टीट्यूट ऑफ मोंटेसोरी एकेडमी' है। कनाडा के पूर्वी प्रान्तों में सन् 1972 से ही कुछ हिन्दी प्रेमियों ने हिन्दी की कक्षाएं शुरू की हैं। कनाडा में हिन्दी के विकास में आर्य समाजियों का योगदान भी कम नहीं है। वहाँ लंबे अरसे से आर्य समाजियों द्वारा धर्म प्रचार ,संस्कृति तथा हिन्दी भाषा के उत्थान में अविरल कार्य होते रहे हैं। ओंथरियो में अति भव्य वैदिक कल्चरल सेंटर है। आर्य समाज के स्थापक श्री राम करण चेता और श्री केवल घोसला थे। इस संस्था में अनेक प्रसिद्ध हिन्दी के पंडित हैं तथा अनेक विदुषियाँ भी शामिल हैं, जैसे पंडित प्रह्लाद आर्य, पं.रघुपाल सिंह, विदुषी शोभा राय, पंडित कमला नायडू ,पं.पुष्पा लाल और पं.कीर्ति स्वान आदि। वे लोग निस्वार्थ भाव से काम कर रहे हैं। श्री.रघुपाल सिंह हिन्दी और अंग्रेजी के मशहूर लेखक हैं। 'कर्तव्य' शीर्षक से एक द्विभाषी पत्रिका के वे संपादक हैं।

सरकार द्वारा अनुमति प्राप्त होने से सन् 1966 में ओंटोरिओ सरकार ने 'हेरितज लैङ्ग्वेज प्रोग्राम' शुरू किया था। इसके अंतर्गत गैर आधिकारिक भाषाओं को भी पढ़ाने की अनुमति दी गयी। सन् 1985 से टोरोंटो शहर के कुछ पब्लिक स्कूलों में हिन्दी का अध्यापन बड़े वेग से चलने लगा। विश्वविद्यालय के संदर्भ में पहले कनेडा के विश्वविद्यालयों के धार्मिक अथवा दर्शन विभाग के अधीन हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम उपलब्ध कराये जाते थे। सबसे पहले कोलम्बिया विश्वविद्यालय

में स्नातक स्तर पर हिन्दी पाठ्यक्रम आरंभ किया गया था। डॉ.एस.काले इसमें पढ़ाने के लिए नियुक्त हुए थे। सन् 1985 में प्रो.बी.एम सिन्हा बतौर अध्यापक मकगील विश्वविद्यालय में सन् 1972 में ही हिन्दी पाठ्यक्रम आरंभ किए गए थे । सन् 2004 में यार्क विश्वविद्यालय में भी हिंदी का अध्ययन शुरू किया गया था। इनके अलावा अन्य अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन चल रहा है। सन् 1982 में हिन्दी परिषद की स्थापना टोरोंटो में की गयी थी। उसके संस्थापक डॉ रघुवीर सिंह थे। किन्तु इस संगठन की गतिविधियाँ केवल टोरोंटो में ही सीमित थीं। सन् 1983 में प्रो.ओ.पी द्विवेदी के प्रधान संपादकत्व में एक राष्ट्रव्यापी हिन्दी संगठन 'हिन्दी लिटेरसी सोसाइटी ऑफ कनाडा' का गठन किया गया । यह संगठन कनाडा के विश्वविद्यालयों में अनेक कार्यक्रम करते रहता है। क्यूबेक हिन्दी संस्थान की स्थापना सन् 1975 में हुई थी, जिसके संस्थापक श्री कुमुद त्रिवेदी थे। मैनीटोवा हिन्दी परिषद की स्थापना सन् 1982 में किया गया जिसके द्वारा हिन्दी के विकास में कार्य हो रहे हैं। कनाडा में हिन्दी के पठन-पाठन में प्रो.हरीशंकर आदेश का महत्वपूर्ण स्थान है। वे त्रिनिदाद से कनाडा आए थे। उन्होंने भारतीय विद्या संस्थान की स्थापना की । सन् 1984 में उन्होंने विद्या मंदिर की स्थापना की और 'ज्योति' नामक पत्रिका भी निकाली। डॉ.भारतेन्दु श्रीवास्तव ने हिन्दी साहित्य सभा की स्थापना सन् 1997 में की। 'हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना सन् 1998 में की गयी। डॉ.श्याम त्रिपाठी इसके अध्यक्ष हैं। यहाँ से हिन्दी पत्रिका 'हिन्दी चेतना' का प्रकाशन हो रहा है।

कनाडा में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से लेखन-कार्य सपन्न होने लगा था। यहाँ कवि सम्मेलन भी लगातार होते रहते हैं। कनाडा में पहला कवि सम्मेलन टोरोंटो की हिन्दी परिषद द्वारा सन् 1982 में आयोजित किया गया। इस कवि सम्मेलन की सफलता से प्रभावित होकर 'हिन्दी लिटेररी सोसाइटी ऑफ कनाडा' के तत्वावधान में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया । सन् 1983 में आयोजित इस कवि सम्मेलन में अनेक ख्याति प्राप्त कवि सम्मिलित हुए थे।

कनाडा में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रहा है। गौरव की बात है कि वहाँ से पंद्रह से ज़्यादा पत्रिकाएँ निकलती हैं। 'नवभारत टाइम्स' कनाडा का प्रथम हिन्दी समाचार पत्र था, जिसका प्रकाशन सन् 1977 में टोरोंटो से किया गया था। अन्य पत्रिकाओं में मुख्य हैं - हस्तलिखित पत्र, हिन्दी टाइम्स,साप्ताहिक पत्र विश्व भारती, अंकुर, भारती, प्रगति, संगम, एशियन आउट लुक, शाहपर, हमवतन टाइम्स, वसुधा पत्रिका आदि। इन पत्रिकाओं के माध्यम से वहाँ पर हिन्दी का विकास तेज़ी से हो रहा है।

हिन्दी साहित्य का सृजन करना हिन्दी के लेखकों तथा कवियों का उद्देश्य होता है। कनाडा के रचनाकारों ने अपनी स्तरीय सृजनात्मक लेखन से हिन्दी साहित्य के निर्माण में श्लाघनीय प्रयास किया है। यहाँ के कई लेखक कवि अपनी-अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवाते रहते हैं। महाकवि के रूप में विख्यात प्रो हरीशंकर आदेश द्वारा लिखे चार महाकाव्य यहाँ से प्रकाशित हैं, यथाः 'अनुराग', 'शकुंतला', 'महारानी दमयंती' और 'निर्वाण'। उनके अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध कवि हैं - सर्वश्री श्याम त्रिपाठी, सुरेन्द्र पाठक, रत्नाकर नराले,

संदीप त्यागी, राकेश तिवारी ,भागवत शरण श्रीवास्तव, श्रीमती स्नेह ठाकुर, श्रीमती स्नेह ठाकुर, श्रीमती भुवनेश्वरी पांडे, सरोज भटनागर, डॉ.शिवदान सिंह यादव, भारतेन्दु श्रीवास्तव, बी.के.कश्यपआदि। डॉ.श्रीनाथ द्विवेदी के सम्पादन में सन् 1988 में कनाडा के सत्रह कवियों की चुनी हुयी कविताओं का संग्रह कनाडाई काव्यधारा नाम से प्रकाशित हुआ। दूसरा महत्वपूर्ण कविता संग्रह है 'काव्य किंजलक' और तीसरा है 'प्रवासी काव्य'। हरीशंकर आदेश जी, स्नेह ठाकुर आदि को 'विश्व हिन्दी सम्मान' प्राप्त है।

कनाडा में रेडियो ,दूरदर्शन आदि सक्रियता से हिन्दी के प्रचार-प्रसार में जुड़े हैं। कनाडा में हिन्दी लखकों की संस्था है 'हिन्दी रईटेर्स गिल्ड'। इसकी स्थापना सन् 1998 में साहित्य के उन्नयन हेतु की गयी थी। कनाडा में हिन्दी का विकास तेज़ी से हो रहा है। समूचे विश्व में अपने अनोखे कार्य-कलापों द्वारा कनाडा के साहित्यकारों ने अपनी पहचान बनाई है और युवा जनता को आगे लाने में लगे हुए हैं।

◆ हिन्दी लेकचरेर
स्नातकोत्तर विभाग
केरल हिन्दी प्रचार सभा।

(पृ.सं.32 के आगे)

जीव रहे था जन्म लेने के तुरंत बाद मर गये। फिर छठा गर्भ धारण किया, तो शायद श्रीवल्लभ मंदिर के विष्णुभगवान को माँ की मनौती के फलस्वरूप हो, शिशु के रूप में विष्णुनारायणन नंपूतिरिजी का जन्म हुआ। माँ की उस मनौती को कार्यरूप देने को ही विष्णुजी ने इस मंदिर के मुख्य पुजारी बनकर विष्णु पूजा की।

कवि विष्णुजी की 'श्रावण गायिका' कविता की चंद पंक्तियाँ देखिए -

'एङ्ङने नीयेन पटिवातिलिले
चङ्ङला नीक्किप्पोन्नु
आरुनिनक्केन कल्लरयुटे
किलिवातिल तुरन्नु तन्नु (मूल)।
कैसे तू मेरी ड्योढ़ी की
जंजीर तोड़के आया
किसने तुझे मेरी कब्र का
झरोखा खोल दिया (अनुवाद)।

'भूमि गीतङ्ङल' में क्रोध भाव से अपने पर पड़ने को उद्यत होनेवाली बिजली से वात्सल्य भाव से भूमि पूछती है -

'तेरी बचकानी तथा दिल्लगी
मेरी ओर क्यों है?'

मलयालम के विख्यात कवि प्रो. विष्णुनारायण नंपूतिरिजी कई पुरस्कारों से नवाज़े गये, जैसे -

पद्मश्री (2014), एषुत्तच्छन पुरस्कार (2014), वयलार अवार्ड (2010), वल्लत्तोल पुरस्कार (2010), वीणपूवु शताब्दी पुरस्कार (2008), उल्लूर पुरस्कार (1993), चङ्ङम्पुष़ा पुरस्कार (1989), केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार ('उज्जयिनियिले राप्पकलुकल' को, 1996), ओटक्कुष़ल अवार्ड ('मुखमेविटे' को, 1983), केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार ('भूमिगीतङ्ङल' को , 1979) आदि। महान कवि श्री विष्णुनायारण नंपूतिरिजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

अमेरिका में हिन्दी शिक्षण

♦ अजित्रा.आर.एस

अमेरिकी सरकार ने सन् 2006 में हिंदी भाषा को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण भाषा के रूप में घोषित किया। इस प्रकार की नई भाषा नीति अमेरिका की हिंदी शिक्षा को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण कारण बना। उसके बाद यहाँ हिंदी पठन-पाठन का एक आंदोलन प्रारंभ हो गया और हिंदी को एक महत्वपूर्ण विदेशी व हैरिटेज भाषा के रूप में पढ़ाने के लिए अमेरिका की विदेशी भाषा अनुसंधान संस्थाओं, विद्यालयों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों द्वारा भाषा शिक्षा का संगठित प्रयास प्रारंभ हुआ। आज अमेरिका की शिक्षा व्यवस्था में हिंदी एक महत्वपूर्ण स्थान पर विराजमान है। अमेरिका में लगभग 150 से ज़्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। कई विदेशी प्राध्यापक यहाँ हिंदी का अध्यापन कर रहे हैं। उन्हें भारत की संस्कृति, त्योहार, धर्म, इतिहास,योग, ध्यान आदि की शिक्षा दी जाती है। इसके साथ फिल्मों द्वारा भी हिंदी सिखायी जाती है ।

कामकाज के लिए अमेरिका पहुंचनेवाले भारतीयों ने अपने घरों में, मंदिरों में अपनी भाषा और संस्कृति का व्यवहार किया। कैलिफोर्निया में सन् 1905 में पहला गुरुद्वार बना। मंदिरों का निर्माण धीरे-धीरे होने लगा। बच्चों को हिंदी शिक्षण देने के लिए घरों में और मंदिरों में 'बाल विहार' शुरू किए गए। हर शनिवार और रविवार को चलनेवाली ये छोटी-छोटी कक्षाएँ आज बहुत बड़ा रूप ले जा चुकी हैं ।

सरकारी प्रोत्साहनों और अनुदान की बदौलत टैक्सास और न्यू जर्सी के शिक्षा अधिकारियों ने स्कूलों में हिंदी पाठ्यक्रम प्रारंभ किए। स्कूल की कक्षाओं में हिंदी को प्रविष्ट कराने में हिंदी यू.एस.ए, हेरिटेज, फाउंडेशन,युवा हिंदी संस्थान जैसी स्वयं सेवी संस्थाओं ने निरंतर प्रयास किए हैं। एडिसन स्कूल में हिंदी पाठ्यक्रम भारतीय समाज की पहचान बनकर प्रारंभ किया गया। टेक्सास में हर्स्टयूलेस स्कूल संकुल में अब माध्यमिक कक्षाओं में हिंदी की पढ़ाई प्रारंभ हो चुकी है। पेंसिलवेनिया के बेनसेलम स्कूल डिस्ट्रिक्ट में हिंदी को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिलवेनिया में बिज़िनेस की पढ़ाई के लिए अपने एम बी ए के विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक हिंदी का एक विशेष पाठ्यक्रम शुरू किया गया है।

अमेरिकी विश्वविद्यालयों में इंग्लैंड के श्री रूपर्ट स्नेल द्वारा रचित 'टीच योरसेल्फ हिंदी' (Teach yourself Hindi) नामक एक हिंदी पुस्तक पढ़ाई जाती है। कई विदेशी प्रोफेसर अमेरिकी विश्वविद्यालयों में हिंदी का शिक्षण कर रहे हैं। सन् 2010 में न्यू जर्सी के केन विश्वविद्यालय में स्टार टॉक कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी शिक्षण का सिलसिला प्रारंभ किया गया, जो कि आज ऑन लाइन पेडागोजिकल हिंदी पाठ्यक्रम के रूप में सफलीभूत हो रहा है। यूरोप और अमेरिका के कुछ विश्वविद्यालय वेबसाइट द्वारा हिंदी अध्यापन प्रदान

करते हैं। 'हिंदी-उर्दू फ्लैगशिप' नामक कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो अमेरिका में हिन्दी की शिक्षा को बढ़ाने के लिए 'यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास' द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम है। इसके अतिरिक्त अमेरिकी सरकार ने नए कार्यक्रमों की घोषणा की है जिनके अंतर्गत कॉलेज और हाई स्कूल के विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति पर भारत भेजा जाता है। अपने हिंदी के छात्रों को भारत भेजकर हिंदी समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराने का प्रयास यहाँ के भाषा शास्त्रियों द्वारा चलाया जा रहा है।

अमेरिका में आजकल हिंदी जानने का महत्व धीरे-धीरे बढ़ रहा है। इसका श्रेय भारत मूल की अनेक संस्थाओं को है। अमेरिका के विभिन्न प्रदेशों में सक्रिय चिन्मया मिशन, विश्व हिंदू परिषद, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, भारतीय मंदिर और अन्य सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थान शामिल हैं, जो हिंदी को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग मानते हैं और बच्चों को भारतीय विरासत के रूप में सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान करते हैं। हिंदी यू एस ए, बालविहार,यू.एस हिन्दी एसोसिएशन, बालागोकुलम, अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, विश्व हिंदी न्यास विद्यालय आदि संस्थाएँ अमेरिका के युवा जगत के लिए हिंदी भाषा और उससे संबंधित संस्कृति की कक्षाएं चला रही हैं। सन् 2009 में युवा हिन्दी संस्थान का निर्माण हुआ जिसके तत्वावधान में 2010 में एटलांटा (जार्जिया प्रदेश) और 2011 में न्यूयॉर्क (डेली वेयर प्रदेश) में युवाओं को हिंदी भाषा और संस्कृति सिखाने के लिए विशाल शिविरों का आयोजन किया गया।[1]

अमेरिका में हिंदी के विकास के लिए बनी संस्थाओं में वार्षिकोत्सव कवि सम्मेलन आदि आयोजित किये जाते हैं। सुषमा बेदी, अंजना संधीर, डॉ.सुरेंद्र गंभीर रामेश्वर अशांत, विनोद तिवारी आदि साहित्यकार अमेरिका में रहकर हिंदी में लिख रहे हैं।

अमेरिका में लगभग 2 लाख लोग हिंदी बोलते और समझ लेते हैं। अमेरिका में स्थापित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति 1980, विश्व हिंदी समिति 1992, हिंदी न्यास 2002 आदि हिंदी भाषा के प्रचार व प्रसार का कार्य कर रहे हैं। अमेरिकी व्यापारी लोग वहाँ स्थित अप्रवासी भारतीयों से व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से हिंदी सीखने के इच्छुक रहते हैं। सॉफ्टवेयर के विशेषज्ञ बिल गेट्स ने हिंदी में सॉफ्टवेयर बनाकर विश्व में हिंदी के प्रसार में क्रांतिकारी भूमिका अदा की है।[2]

हिंदी के विकास के लिए हिंदी प्रशिक्षण और परंपरागत साहित्यिक माध्यमों के अलावा इंटरनेट मोबाइल एप्स आदि ने भी हिंदी के विकास के नए मार्ग खोले हैं। कुछ संस्थाएँ अपनी पत्रिकाएं प्रकाशित करती हैं। यहाँ 'विश्व विवेक' नामक पत्रिका प्रकाशित हो रही है। अमेरिका में जन्मे सैमुअल के लोग ने सन् 1875 में 'ए ग्रामर ऑफ हिंदी लैंग्वेज' नामक पुस्तक तैयार की है। अमेरिका में प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी भाषा को बढ़ावा देते हुए बराक ओबामा जी ने हिंदी सीखने के लिए हज़ारों की तादाद में हिंदी भाषी लोगों को भर्ती करवाया और हिंदी सीखने केलिए बढ़ावा दिया। यह बात हिंदी भाषा के वैश्वीकरण के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई है। यदि संस्थाएँ कुछ और प्रयास करके छोटे से सुझावों पर हिंदी का प्रयोग गंभीरता से अमल करें तो अमेरिका में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल होगा।

संदर्भ :

1. 'अमेरिका में हिंदी शिक्षण की लहर' डॉ.सुरेंद्र अग्रवाल

2. हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य विकास और चुनौतियां - प्रो.यज्ञ प्रसाद तिवारी

सहायक ग्रंथ :

1.हिंदी का वैश्विक परिदृश्य - डॉ.कल्पना देशपांडे

2.हिंदी राष्ट्रभाषा से विश्व भाषा की ओर - डॉ.सुरेश माहेश्वरी

3.हिंदी भाषा के विविध आयाम (राष्ट्रीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में)- डॉ.मिथिलेश दीक्षित, डॉ.रवीन्द्र प्रभात

4.हिंदी के विकास में विदेशी विद्वानों का योगदान- डॉ. जोस ऑस्टिन

5. हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य विकास और चुनौतियाँ- प्रो. यज्ञ प्रसाद

◆ शोधार्थी
हिन्दी विभाग
महात्मा गान्धी कॉलेज
केरल विश्वविद्यालय

श्रंद्धांजलियाँ : पद्मश्री गुरु चेमञ्चेरी कुञ्जिरामन नायर, पी. बालचन्द्रन

पद्मश्री गुरु **चेमञ्चेरी कुञ्जिरामन नायर** (कथकली आचार्य) 105 वर्ष की आयु में 15 मार्च 2021 को कोषि़क्कोड़ में दवंगत हए।

पी. बालचन्द्रन का जन्मस्थान है शास्तांकोट्टा (कोल्लम जिल्ला)। पिता कोट्टयिल पद्मनाभ पिल्लै थे और माता थी श्रीमती सरस्वती भाई।

अभिनेता तथा मलयालम लेखक **पी.बालचन्द्रन** 5 अप्रैल 2021 को दिवंगत हुए। वे वैक्कम (कोट्टयम जिला) के निवासी थे। मलयालम सिनेमा और नाटक को उनकी देन अनुपम है। सन् 1972 में मातृभूमि विषु विशेषांक की प्रतियोगिता में उनके 'तामसी' नाटक को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

बालचन्द्रनजी ने महात्मागाँधी विश्वविद्यालय के 'स्कूल ऑफ लिटरेचर' विभाग मे लेकचरेर के पद पर अपनी नौकरी का शुभारंभ किया। फिर 'स्कूल ऑफ ड्रामा' में अध्यापनवृत्ति की। 'मकुटी', 'पावं उसमान', मायासी तंक', 'नाटकोत्सव' जैसे कई नाटकों की रचना की। 'एकाकी', 'लगे', 'थिएटर तेरापी', 'ओरु मधुवेनल प्रणयरावु', 'गुड वुमन ऑफ सेटस्वान आदि नाटकों का निर्देशन किया।

'उल्लटक्कं', 'अंकिल बन', 'पवित्रं', 'तच्चोली वर्गीस चेकवर', 'अग्निदेवन', 'मानसं', 'पुनरधिवासं', 'कम्मट्टिपाटं' आदि चलचित्रों को पटकथाएँ और संवाद लिखे। 'वक्कालत्तु नारायणन कुट्टी', 'शेषं', 'पुनरधिवासं', 'शिवं', जलमर्म्मरं', 'ट्रिवान्ड्रम लोड्ज', 'होटल कालिफोर्नीया', 'केटल कटन्नोरी मात्तुक्कुट्टी', 'कम्मट्टिप्पाटं' आदि फिल्मों में अभिनय किया। सन् 2012 में मलयालम कवि के.पी.कुञ्जिरामन नायर के जीवनवृत्त पर आधारित फिल्म 'इवन मेघरूपन' को पटकथा लिखी और फिल्म निर्देशन भी किया।

सन् 1989 को अच्छे नाटक लेखन को 'केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार' उनकी रचना 'पावं उस्मान' को प्राप्त हुआ। सन् 1989 को नाटक रचना को 'केरल राज्य का प्रोफेशनल नाटक पुरस्कार' प्राप्त हुआ। 'पुरनाधिवास' फिल्म के पटकथा लेखन को सन् 1999 का 'केरल चलचित्र अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। श्रेष्ठ नाटक रचना को सन् 2009 का 'केरल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' भी बालचन्द्रनजी को प्राप्त हुआ।

अभिनेता तथा नाटककार बालचन्द्रनजी को विनम्र श्रंद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

विश्वभाषा और राज भाषा

♦ डॉ.पी.लता

सरकार की आर्थिक उदारीकरण (Liberalization) की नीति तथा भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण (Globalization) स्वतंत्र भारत में अंग्रेज़ी का वर्चस्व स्थापित करने में एक प्रकार से सहायक बने हैं। ऐसा भी मानना पड़ेगा कि भूमंड़लीकरण से हिन्दी की स्थिति भी बेहतर हुई है। विदेशों में रोज़गार आदि के लिए बसनेवाले भारतीय परस्पर हिन्दी ही बोलते हैं। भारत में रोज़गार आदि के लिए आनेवाले विदेशी अंग्रेज़ी के सिवा टूटी-फूटी हिन्दी में यहाँ के लोगों से बोलने का प्रयास करते हैं। विदेश के लोग हिन्दी पढ़ना चाहते हैं तो उसका मुख्य कारण 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तत्व पर आधारित भमंड़लीकरण है। भूमंड़लीकरण से भारत में रोज़गार के अवसर विदेश के लोगों केलिए भी बढ़े हैं। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच बढ़ती अन्योन्याश्रित प्रवृत्ति ही 'भूमंड़लीकरण' है।

आज भारत के 'सिनेमा' विश्व स्तर के मानने लगे हैं। विदेशी नागरिकों का 'हिन्दी फिल्म' के प्रति आकर्षण बढ़ा है।

भूमड़लीकरण से देश - विदेश में हिन्दी का उपयोग बढ़ने का एक कारण 'विज्ञापन' में हिन्दी का बढ़ता प्रयोग है। आज जन-साधारण की क्रय - शक्ति बढ़ने से कंपनियाँ अपने उत्पादों की ओर आकर्षक 'हिन्दी विज्ञापनों' से जनसाधारण को आकर्षित करने का प्रयास करती हैं। भारत में भी बहुराष्ट्र कंपनियाँ हैं, अतः हिन्दी विज्ञापनों के ज़रिए चीज़ों का प्रसार बढ़ना सहज है।

एक भाषा के वैश्विक रूप का परिचय पाने केलिए विश्व स्तर पर उसका उपयोग कैसे होता है, कहाँ - कहाँ होता है - इस पर ध्यान देना है। हिन्दी 'विश्व भाषा' है और विदेशों में उसका उपयोग बढ़ता जा रहा है। मोरिशस में सन् 1926 में 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' की स्थापना 'तिलक विद्यालय' नाम से हुई। कोरिया के एक प्रसिद्ध नगर टोराण्टो से 'संगम' नाम से एक पत्र तथा 'संवाद' नाम से एक मासिक पत्रिका हिन्दी म निकलती हैं। रूस, जापान, फिनलैण्ड़, मोरिशस, फिजी, सूरीनाम, इंडोनेशीया, जावा, सुमात्रा, फ्रांस, जर्मनी, हंगरी, चीन, रोमानिया आदि कई जगहों में हिन्दी का उपयोग होता है। विश्व भर में समाचार बुलेटिन, सिनेमा तथा कैसेट के माध्यम से हिन्दी का प्रसार हो रहा है। मोरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, ट्रिनीडाड, टुबगो आदि भारतवंशी बहुल देश हैं, जहाँ के लगभग 40 प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं। जिन बाहरी देशों में भारतीय मूल के लोग अधिक मात्रा में रहते हैं वहाँ हिन्दी का प्रचार - प्रसार हो रहा है।

मोरिशस में कई व्यक्ति आज भी 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की परिक्षाओं में भाग लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया के फिजी नामक द्वीप में हिन्दी पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रहीं हैं। वहाँ के बाज़ारों में अंग्रेज़ी के साथ - साथ हिन्दी में भी नाम फलक लिखे जाते हैं। कई सड़कों के नाम हिन्दी में लिखे गये हैं। हिन्दी की पाठशाला यहाँ सन्

1936 में खोली गयी थी।

सन् 2009 तक की गणना के अनुसार कुल 175 विश्वविद्यालयों में विदेशों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। इनमें 45 विश्वविद्यालय सर्वाधिक विकसित राष्ट्र अमेरिका में हैं। अमेरिका के ऐसे विश्वविद्यालयों में प्रमुख हैं- कालिफोरनिया, शिकागो, टैक्सास, कोलंबिया आदि।

सन् 1973 में 'राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा' ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का साकार स्वरूप 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' की आवश्यकता की ओर देश का ध्यान आकृष्ट किया। इसके परिणामस्वरूप 'प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन' सन् 1975 में नागपुर (भारत) में संपन्न हुआ। अन्य 'विश्व हिन्दी सम्मेलनों' का विवरण इस प्रकार है - द्वितीय मोरिशस में, तृतीय नई दिल्ली में, चतुर्थ मोरिशस में, पंचम ट्रिनीडाड में, छठा लंदन में, सातवाँ सूरीनाम में तथा आठवाँ न्यूयोर्क में, नवाँ दक्षिण अफ्रीका में, दसवाँ भोपाल में तथा ग्यारहवाँ मॉरीशस में। हिन्दी को 'विश्व भाषा' का स्थान देने के प्रयत्न के सिलसिले में भारत सरकार ने 'आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन' अमेरिका के प्रमुख शहर न्यूयोर्क के संयुक्त राष्ट्र संघ के भवन में आयोजित किया। इस अवसर पर हमारे राष्ट्र प्रेमी हिन्दी सेवी व्यक्तियों ने हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में मान्यता प्राप्त आधिकारिक भाषा का दर्जा देने की माँग की। अब इस बात पर संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O) में गंभीर चर्चा हो रही है। विश्व भाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति केलिए ज्ञान-विज्ञान की सामग्री अधिकाधिक हिन्दी में तैयार करनी चाहिए। सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा के रूप में हिन्दी को महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए।

अमेरिका के व्यापारिक शहर न्यूयोर्क में 13 जूलाई 2007 से 15 जुलाई 2007 तक संपन्न 'आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन' में संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O) के महासचिव श्री बान की मून (Ban ki moon) ने हिन्दी में सदस्यों का संबोधन किया। उन्होंने 'नमस्ते' और 'क्या हाल चाल है?' आदि हिन्दी शब्दों से सम्मेलन के हिन्दी प्रेमी सदस्यों का दिल मोह लिया।

'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' की माँग और प्रयास से तथा 'विश्व हिन्दी सम्मेलनों' के मंतव्य पर आधारित महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय संसद में प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार द्वारा वर्धा में स्थापित किया गया तथा मोरिशस में फ़रवरी 2008 में 'विश्व हिन्दी सचिवालय' (World Hindi Secretariate) की स्थापना की गयी। इस विश्व हिन्दी सचिवालय से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की त्रैमासिक पत्रिका 'विश्व हिन्दी पत्रिका' नियमित रूप से निकल रही है। इस पत्रिका में समस्त विश्व में हिन्दी से संबन्धित विषय पर शोध लेख प्रस्तुत किये जाते हैं।

विदेशों में हिन्दी का अध्ययन होने के साथ - साथ हिन्दी में पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। जापान में विगत कई वर्षों से 'सर्वोदय' पत्रिका प्रकाशित हो रही है। करीब 61 वर्ष पूर्व यहाँ के भाषा विद्वान प्रो. वायवो दोई ने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए तथा पी-एच.डी की उपाधियाँ प्राप्त कीं, साथ ही उन्होंने प्रेमचन्द के 'गोदान' उपन्यास का अनुवाद भी जापानी भाषा में किया।

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10-13 जनवरी 1975 को 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' द्वारा आयोजित

किया गया। इस स्मृति में भारत सरकार ने 10 जनवरी को प्रतिवर्ष 'विश्व हिन्दी दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है।

चीनी भाषा में रवीन्द्रनाथ टागोर की कृतियों, मैला आंचल (फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास) आदि का अनुवाद हुआ है। चीन की ऐतिहासिक दीवार की स्वागत शिला पर 'ओम नमो भगवते' हिन्दी में लिखा गया है।

अमेरिका के स्कूलों में अब यह व्यवस्था की गयी है कि किसी पाठशाला में यदि 10 प्रतिशत छात्र हिन्दी पढ़ने की मांग करते हों तो इसकी तुरंत व्यवस्था की जाए। हिन्दी भाषा की जानकारी अमेरिका में एक सामयिक ज़रूरत के तौर पर देखी जा रही है। एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति पर ध्यान देकर टेक्सास प्रांत ने अपने हाईस्कूल के छात्रों केलिए 480 पृष्ठोंवाली हिन्दी पाठ्य पुस्तक–नमस्ते–तैयर की है। भारतीय मूल के शिक्षक श्री अरुण प्रकाश ने यह पुस्तक तैयार की है। टेक्सास प्रांत हिन्दी की लोकप्रियता के मामले में अमेरिका में सब से आगे है।

अब तक प्राप्त जानकारी के अनुसार हिन्दी साहित्य के इतिहास का सर्वप्रथम लेखक एक विदेशी फ्रेंच विद्वान् गार्सा द तॉसी ठहरता है। उन्होंने फ्रेंच भाषा में 'इस्त्वार द ला लितेरात्यूर एंदुई ए ऐंदुस्तानी' नामक ग्रन्थ में अंग्रेज़ी वर्णक्रमानुसार हिन्दी और उर्दू भाषा के अनेक कवियों और कवयित्रियों का परिचय दिया है। ग्रन्थ के आरंभ में लेखक ने 25 पृष्ठों की भूमिका में हिन्दी भाषा और उसके साहित्य के विषय में विचार प्रकट करते हुए उर्दू भाषा को हिन्दी के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया है। इससे ग्रन्थ का कलेवर अत्यधिक बढ़ गया है।

"हिन्दी ज्ञान मेरे लिये अमृतपान है, जितनी बार उसे पीता हूँ, उतनी बार लगता है, पुनः जीता हूँ।" – ये पंक्तियाँ किसी भारतवासी की नहीं, वरन् एक चेक नागरिक, प्रमुख शिक्षाविद् एवं भारत के पूर्व राजदूत डॉ.ओदेलोन स्मेकल की हैं। उन्होने हिन्दी में 12 से अधिक पुस्तकें लिखीं, जो प्रकाशित भी हुईं।

हिन्दी में सर्वप्रथम बी.बी.सी. लंदन ने नियमित समाचारों का प्रसारण शुरू किया था। किन्तु अब हिन्दी प्रसारण हेतु 'वॉयस ऑफ अमेरिका', 'जर्मन रेडियो', 'जापान रेडियो', 'पेकिंग रेडियो (चीन)', 'विविध भारती (सिलोण)' आदि बहुचर्चित हैं।

हमारे पूर्वज जो गिरमिटिया मज़दूर होकर मोरीशस, सूरीनाम, फिजी, ट्रिनीडाड, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में गये, वे अपने साथ तुलसीदास के 'रामचरित मानस' और 'हनुमान चालीसा' भी ले गये। अब इन देशों में बहुत बड़ी संख्या में हिन्दी संस्थाओं द्वारा हिन्दी शिक्षण कार्य हो रहा है।

इटली के डॉ.लुइजि पियो तेस्सी तोरी ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय (इटली) में 'रामचरित मानस और वाल्मीकी रामायण का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध किया। वे भारत से इतने प्रभावित हुए कि इटली छोड़कर भारत आए और जीवनपर्यंत भारत (बीकानेर) में रहे।

आज हिन्दी विश्व के कई देशों में पढ़ाई जाती है। हिन्दी का पहला व्याकरण सन् 1698 में जॉन जोशवा केटलर ने डच भाषा में लिखा। हिन्दी साहित्य का पहला इतिहास गार्सा द ताँसी ने सन् 1839 में फेंच भाषा म लिखा। हिन्दी का पहला शोध-कार्य 'तुलसी

का धर्म दर्शन' विषय पर सन् 1918 में जे.आर. कार्पेन्टर ने लंदन विश्वविद्यालय में किया। सन् 1800 में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता के जॉन गिल क्राइस्ट हिन्दी के पहले प्रोफेसर थे। भारत में विश्वविद्यालय स्तर की हिन्दी शिक्षा अहिन्दी भाषी राज्य बंगाल के कलकत्ता विश्वविद्यलय में सर्वप्रथम (सन् 1919 में) प्रारंभ हुई। हिन्दी में सर्वप्रथम एम.ए. की उपाधि एक बंगाली सज्जन नलिनी मोहन सन्याल ने सन् 1919 में प्राप्त की।

अब 'हिन्दी' अन्तर्राष्ट्रीय भूमण्डलीकरण युग की 'विश्व भाषा' बन चुकी है।

राज भाषा :

'राज भाषा' राजकाज करने की भाषा है। अर्थात् 'राज भाषा' वह भाषा है, जो सरकारी कामकाज केलिए प्रयुक्त होती है। यानी 'राज भाषा' एक राष्ट्र के प्रशासन की भाषा है। भारत की राज भाषा 'हिन्दी' है और 14 सितंबर 1949 में 'हिन्दी' को संघ की 'राज भाषा' के रूप में प्रतिष्ठा मिली। भारत के संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 में लिखा गया है कि 'संघ की राज भाषा' हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। यहाँ 'संघ की राजभाषा' से तात्पर्य संघ के प्रशासनिक कार्यों केलिए प्रयुक्त भाषा से है। स्पष्ट है कि राजभाषा वह भाषा है, जो सरकार द्वारा प्रशासनिक कार्य केलिए संवैधानिक मान्यता प्राप्त करके प्रयोग में लायी जाती है।

'राज भाषा' की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं - वह संवैधानिक मान्यता प्रप्त भाषा है। उसका संबन्ध केवल प्रशासन से है। उसकी शब्दावली 'पारिभाषिक' ('पारिभाषिक शब्द' ऐसा शब्द है, जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाता है।) होती है। उसमें विशिष्ट शैली का प्रयोग होता है। उसका प्रयोग-क्षेत्र सीमित होता है। यह ज़रूरी नहीं है कि 'राज भाषा' संबन्धित राष्ट्र की ही कोई भाषा हो। अंग्रेज़ों के शासन काल में भारत की राज भाषा अंग्रेज़ी थी, जो भारतीयों केलिए विदेशी भाषा थी। एक राष्ट्र की 'राज भाषा' वहाँ की 'राष्ट्र भाषा' भी हो सकती है या कोई विदेशी भाषा भी। भारत की 'राष्ट्र भाषा' हिन्दी 'संघ की राज भाषा' के पद पर भी आसीन हुई।

14 सितंबर 1949 को हिन्दी भारत की 'राज भाषा' स्वीकृत हुई। अतः प्रतिवर्ष 14 सितंबर को भारत भर 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है। 26 नवंबर 1949 को 'भारतीय संविधान' को अंतिम रूप दिया गया और 26 जनवरी, 1950 को यह संविधान लागू हुआ। अतः 26 जनवरी भारत का 'गणतंत्र दिवस' है। 26 जनवरी, 1950 से हिन्दी को भारत की 'राज भाषा' के रूप में संवैधानिक मान्यता मिली।

'भारतीय संविधान' के भाग 5, भाग 6 तथा भाग 17 में क्रमशः अनुच्छेद 120, 210 तथा 343 से 351 तक (कुल ।। अनुच्छेदों में) 'राज भाषा' के बारे में कहा गया है, जो इसप्रकार है-

भाग 2, अनुच्छेद 120 में 'संसद में प्रयुक्त होनेवाली भाषा' का निर्देश दिया गया है कि संसद में कार्यवाही 'हिन्दी' या 'अंग्रेज़ी' में होगी। परंतु यदि कोई संसद सदस्य इन दोनों भाषाओं में अपने आपको अभिव्यक्त नहीं कर पाते तो वे अपनी 'मातृ भाषा' में बोल सकते हैं। इस संदर्भ में उनके कथन का हिन्दी और अंग्रेज़ी में अनुवाद करने की व्यवस्था भी की गयी है।

भाग 6, अनुच्छेद 210 राज्यों के 'विधानमंडलों में

प्रयोग की जानेवाली भाषा' संबन्धी है। इसमें कहा गया है कि प्रत्येक राज्य के विधान मंडल की कार्यवाही राज्य की 'राज्यभाषा' में या 'हिन्दी' या 'अंग्रेज़ी' में की जा सकती है। परंतु विधान मंडल के कोई सदस्य इन भाषाओं में अपने आपको अभिव्यक्त नहीं कर पाते तो उन्हें अपनी मातृ भाषा का प्रयोग करने का अधिकार है।

भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक संघ की राजभाषा के संबन्ध में हैं। ये नौ अनुच्छेद कुल चार अध्यायों में रखे गये हैं। प्रथम अध्याय में 343 तथा 344 अनुच्छेद रखे गये हैं, जो संघ की राज भाषा के संबन्ध में हैं। द्वितीय अध्याय में रखे गये 345, 346 तथा 347 अनुच्छेदों में 'राज भाषा' के रूप में प्रांतीय भाषाओं के प्रयोग के संबन्ध में निर्देश दिये गये हैं। तृतीय अध्याय में रखे गये अनुच्छेद 348 में उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय की भाषा के संबन्ध में निर्देश दिये गये हैं। इस अध्याय के अनुच्छेद 349 संविधान के लागू होने के पन्द्रह वर्षों तक अंग्रेज़ी का भी प्रयोग बनाये रखने के संबन्ध में है। चौथे अध्याय के अनुच्छेद 350 में दुःख के निवारण केलिए अभिवेदन में प्रयोग करने योग्य भाषा के बारे में तथा इसी अध्याय के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के संबन्ध में निर्देश दिये गये हैं।

अनुच्छेद 343 में तीन बातें कही गयी हैं -

(1) संघ की राज भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों केलिए प्रयोग होनेवाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंततर्राष्ट्रीय रूप होगा।

(2) किसी बात के होते हुए भी संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की कालावधि केलिए (26 जनवरी 1965 तक) संघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों केलिए अंग्रेज़ी भाषा प्रयोग की जाती रहेगी, जिनकेलिए ऐसे प्रारंभ के ठीक पहले वह प्रयोग की जाती थी। राष्ट्रपति उक्त कालावधि में आदेश द्वारा संघ के राजकीय प्रयोजनों में से किसी केलिए अंग्रेज़ी भाषा के साथ - साथ हिन्दी भाषा का तथा भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के साथ - साथ देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेंगे।

(3) संसद उक्त पन्द्रह साल की कालावधि के पश्चात विधि द्वारा (क) अंग्रेज़ी भाषा का अथवा (ख) अंकों के देवनागरी रूप का, ऐसे प्रयोजनों केलिए प्रयोग उपबन्धित कर सकेगा।

अनुच्छेद 344 में राष्ट्रपति को राजभाषा के प्रयोग के संबन्ध में सिफारिशें देने केलिए संविधान के लागू होने के पाँच वर्ष की समाप्ति पर 'राज भाषा आयोग' और 'संसदीय राज भाषा समिति' का गठन करने का अधिकार दिया गया है।

(इस अनुच्छेद के अनुसार जून 1955 को 'राज भाषा आयोग' का गठन हुआ। मुम्बई के भूतपूर्व मंत्री स्व. श्री बालगंगाधर खेर इस आयोग के अध्यक्ष बने और विभिन्न राज्यों के 20 प्रतिनिधि इस आयोग के सदस्य बने। इस आयोग के प्रतिवेदन पर विचार करने हेतु 1957 में 'संसदीय राज भाषा समिति' का गठन किया गया, जिसमें लोक सभा के बीस और राज्य सभा के दस सदस्य शमिल थे। समिति के अध्यक्ष बने तत्कालीन गृहमंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत। इस समिति की प्रथम बैठक 16 नवंबर 1957 को हुई। आज राजभाषा संबन्धी जो - जो कार्यक्रम लागू किये जा रहे हैं, उनके मूल में इस समिति की सिफारिशें हैं। अनुच्छेद 344 की प्रमुख बात यह है कि आयोग अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करने में भारत की

औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का तथा लोक सेवाओं के संबन्ध में हिन्दी भाषा भाषी लोगों के न्याय संगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।)

अनुच्छेद 345 के अनुसार किसी भी राज्य के विधान मंडल को विधि द्वारा एक या एकाधिक प्रादेशिक भाषाओं अथवा हिन्दी को सरकारी प्रयोजनों के प्रयोग केलिए स्वीकार करने की व्यवस्था दी गयी है।

अनुच्छेद 346 में कहा गया है कि संघ में राजकीय प्रयोजनों केलिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच में तथा किसी राज्य और संघ के बीच में संचार केलिए राज भाषा होगी, परन्तु यदि दो या अधिक राज्य करार करते हैं कि ऐसे राज्यों के बीच में संचार केलिए राज भाषा हिन्दी होगी तो ऐसे संचार केलिए वह भाषा प्रयोग की जा सकेगी।

अनुच्छेद 347 के अनुसार यदि किसी राज्य के जनसमुदाय का पर्याप्त अनुपात चाहता है कि उसके द्वारा बोली जानेवाली कोई भाषा राज्य द्वारा अभिज्ञात की जाए, तो राष्ट्रपति निदेश दे सकेंगे कि ऐसी भाषा को उस राज्य में सर्वत्र अथवा उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन केलिए जैसा कि वह उल्लिखित करे राजकीय अभिज्ञा दी जाए। (अर्थात् किसी राज्य का जनसमुदाय अपनी भाषा को मान्यता मिलना चाहता है तो राष्ट्रपति उस भाषा को सरकारी अभिज्ञा देने का अधिकारी है। यह अनुच्छेद 345 का स्पष्टीकरण है।)

अनुच्छेद 348 उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में तथा अधिनियमों (Acts), विधेयकों (Bills) आदि में प्रयोग की जानेवाली भाषा के संबन्ध में है। उच्चतम न्यायालय में तथा प्रत्येक उच्च न्यायालय में सब कार्यवाहियाँ; विधेयक (संसद के), अधिनियम (जो संसद या राज्य के विधान मंडल द्वारा पारित किये जाएँ), आदेश, नियम, विनियम (Regulation) और उपविधि (जो इस संविधान के अधीन अथवा संसद या राज्य के विधान मंडलों द्वारा निर्मित किसी विधि के अधीन निकाले जाएँ। अंग्रेज़ी में (Bylaw) आदि के प्राधिकृत पाठ अंग्रेज़ी भाषा में होंगे। किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से अपने राज्य के उच्च न्यायालय में उस राज्य की राज भाषा या हिन्दी का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा। किसी विधान मंडल द्वारा किसी विधि के अधीन निकाले गये आदेश, नियम, विनियम और उपविधि अंग्रेज़ी भाषा में नहीं तैयार किये गये हों तो उस राज्य के राजपत्र (Gazette) में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित उनका अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

अनुच्छेद 349 संविधान के लागू होने के 15 वर्षों तक अंग्रेज़ी का प्रयोग करने के संबन्ध में है। इस अनुच्छेद के अनुसार 'राज भाषा आयोग' (अनुच्छेद 344 के खंड -1 के अधीन गठित आयेग) की सिफारिशों तथा 'संसदीय राज भाषा समिति' (अनुच्छेद 344 के खंड 4 के अधीन गठित समिति) के प्रतिवेदनों पर विचार करने के पश्चात्त राष्ट्रपति जब तक कोई आदेश न दें तब तक संघ के राजकीय प्रयोजनों केलिए कोई दूसरी भाषा प्राधिकृत नहीं मानी जाएगी।

अनुच्छेद 350 के अनुसार किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी पदाधिकारी को यथास्थित संघ में या रज्य में प्रयोग होनेवाली किसी भाषा में अभिवेदन देने का प्रत्येक व्यक्ति को हक होगा।

अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास केलिए निदेश दिया गया है, जो इस प्रकार है - हिन्दी भाषा की

प्रसार वृद्धि करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके तथा उसकी आत्मीयता में हस्तक्षेप किये बिना हिन्दुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात् करते हुए तथा जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार केलिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः वैसी उल्लिखित भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।

अष्टम अनुसूची (Schedule - VIII):-

संघ में प्रयुक्त राजभाषा हिन्दी के स्वरूप का फार्मुला श्री एन. गोपाल स्वामी आयंगर ने 2-9-1949 को पेश किया था। चर्चा-परिचर्चा के बाद कई सुधार किये गये। 14-9-1949 को शाम के छः बजे 'मुंशी आयंगर फार्मुला' स्वीकार कर लिया गया और हिन्दी को 'राजभाषा' के पद पर प्रतिष्ठित किया गया। 'मुंशी आयंगार फार्मुला' नाम से विख्यात अनुच्छेद संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से अनुच्छेद 351 तक हैं, साथ ही संविधान के परिशिष्ट में दी गयी 'अष्टम अनुसूची' भी।

आयंगर ने 'अष्टम अनुसूची' में 14 भाषाएँ दी थीं। बाद में एक संशोधन में 'सिंधी' भाषा जोड़ी गयी। फिर एक संशोधन में 'मणिपुरी', 'नेपाली' तथा 'कोंकणी' भाषाएँ जोड़ी गयीं। फिर चार भाषाएँ - 'मैथिली', 'डोगरी', 'बोड़ो' और 'सथाली'-जोड़ी गयीं। अब संविधान में मान्यता प्राप्त भाषाएँ कुल 22 हैं, जो इस प्रकार हैं -

(1) असमिया, (2) उड़िया, (3) उर्दू, (4) कन्नड़, (5) कश्मीरी, (6) गुजराती, (7) तमिल, (8) तेलुगू, (9) पंजाबी, (10) बंगला, (11) मराठी, (12) मलयालम, (13) संस्कृत, (14) सिन्धी, (15) हिन्दी, (16) नेपाली, (17) मणिपुरी, (18) कोंकणी, (19) मैथिली, (20) डोगिरी, (21) बोडो और (22) संथाली।

संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 344 (1) और अनुच्छेद 351 में परिशिष्ट में दी गयी 'अष्टम अनुसूची' का संकेत दिया गया है।

फ्रैंक एन्थेनी ने संविधान की 'अष्टम अनुसूची' में अंग्रेज़ी को सम्मिलित करने के लिए संसद में एक बिल रखा था, जिस पर गरमागरम बहस हुई। अंततः इस आश्वासन पर कि पं.जवहरलाल नेहरूजी इस पर अपने विचार व्यक्त करेंगे, एन्थेनी ने बिल वापस ले लिया। नेहरूजी ने अंग्रेज़ी की पर्याप्त प्रशंसा करते हुए भी स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि 'अंग्रेज़ी निश्चय ही एक थोपी गयी भाषा है। इसने हमारे लिए ज्ञान-विज्ञान की खिड़कियाँ ज़रूर खोलीं और बहुत कुछ ज्ञान दिया भी, पर इस पर एक ऐसी भाषा होने का लांछन भी है जो हमारी अपनी भाषाओं और हमारी सांस्कृतिक परंपराओं के ऊपर जम कर बैठ गयी है।' राजभाषा हिन्दी के विविध प्रयोजनमूलक रूपों में प्रयोग करने योग्य पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का दायित्व 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी आयोग' निभा रहा है।

सहायक ग्रन्थ-

हिन्दी भाषा के विविध रूप - डॉ.पी.लता , केरल हिन्दी प्रचार सभा।

◆ मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी
तिरुवन्तपुरम, केरल राज्य।

हार्दिक बधाइयाँ

एम.आर.गोपिका

धन्यामोल.जी

डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

स्नातक तथा स्नातकोत्तर परीक्षाओं (हिन्दी) में वर्ष 2020 में हिन्दी विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम की छात्राएँ क्रमशः एम.आर.गोपिका और धन्यामोल.जी केरल विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम आयीं। इस विभाग के 10 छात्रों ने एम.फिल उपाधि तथा 14 छात्रों ने पी एच.डी उपाधि पिछले अकादमिक वर्ष में हासिल कीं। सब छात्रों को हार्दिक बधाइयाँ।

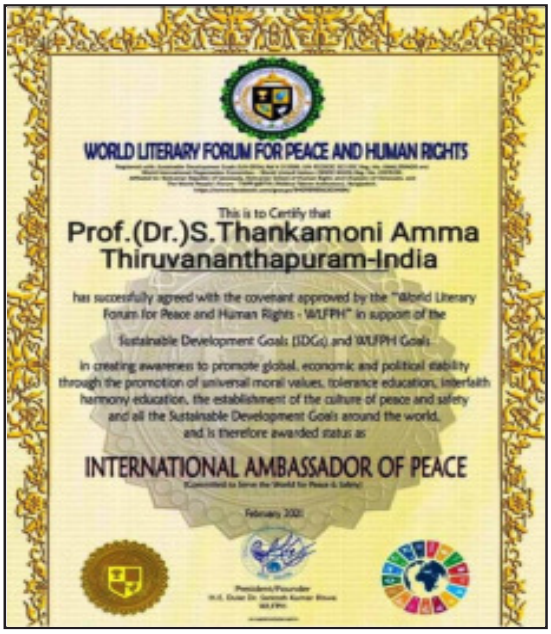

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.36 के आगे)

सही उत्तरः

(1) आ (2) इ (3) अ (4) ई
(5) आ (6) ई (7) आ (8) अ
(9) ई (10) आ

सूचना

NET (हिन्दी) तथा Spoken Hindi की कक्षाओं में प्रवेश पाने को इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें -

फोन : 9946253648, 0471 - 2332468

मुद्रक तथा प्रकाशक डॉ.पी.लता, आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफिस लेन, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम -14 द्वारा अबी प्रकाशन एन्ड प्री-प्रेस, करुमम्, तिरुवनन्तपुरम -2 में मुद्रित तथा डॉ.पी.लता द्वारा संपादित
Printed & Published by Dr.P.Letha, Arathi, T.C. 14/1592, Forest Office Lane, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram -14,
Printed at Abi Design & Pre-Press, Karumom, Thiruvananthapuram -2 & Edited by Dr. P. Letha